



अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

अर्हत उवाच

तितिक्रवं परमं णत्वा।

तितिक्षा मोक्ष का परम साधन है।

परिग्रहे णिविद्धानं,
वेरं तेसिं पवड्डई।

जो परिग्रह के अर्जन, संरक्षण
और भोग में रत हैं, उनका
वेर बढ़ता है।

• नई दिल्ली • वर्ष 24 • अंक 41 • 17-23 जुलाई, 2023



प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 15-07-2023 • पेज : 12 • ₹ 10

पूज्यप्रवर ने बच्चों को प्रदान की मंत्र दीक्षा

अच्छे संस्कारों और प्रारंभिक ज्ञान का सशक्त माध्यम है ज्ञानशाला : आचार्यश्री महाश्रमण

नंदनवन (मुंबई), ६ जुलाई, २०२३

आगम वेत्ता परम पावन आचार्यश्री महाश्रमण जी ने भगवती आगम के सातवें शतक की व्याख्या करते हुए फरमाया कि धार्मिक साहित्य में स्वर्ग और नरक की चर्चा प्राप्त होती है। सारे संसारी चार गतियों में भ्रमण करते हैं। जीव के मूल दो भेद किए गए हैं—सिद्ध और संसारी। सिद्ध जीव जो परमात्मा बन गए हैं, वे जन्म-मरण की परंपरा से मुक्त हो गए हैं। संसारी जीवों का जन्म-मरण चलता रहता है। ऐसे जीव भी हैं, जो वनस्पति-काय में ही हैं। वे मनुष्य, तिर्यच या देव गति में कभी गए ही नहीं हैं।

नारकीय गति के जीव पाप कर नरक में जाते हैं। नरक में दस प्रकार की वेदना होती है। सुख-संवेदन तो बहुत ही कम होता है। ये वेदनाएँ हैं—सर्दी-गर्मी, भूख-प्यास, खुजली, ज्वर, दाद, भय, पारस्परिक वेदना भोगते हैं। मनुष्य जीवन में भी अनेक कष्ट आ सकते हैं।

जीवन में अगर कठिनाइयाँ आ जाएँ तो समता से सहना चाहिए। गृहस्थ जीवन में अनेक कठिनाइयाँ आ सकती हैं। साधु उन कठिनाइयों से मुक्त रहते हैं। कठिनाई की स्थिति में भी मानसिक संतुलन ठीक रहे। सकारात्मक चिंतन करें। हम हमारी समता को खंडित न करें। बीमारी के साथ भी मैत्री रहे। चित्त समाधि बनी रहे। समस्या और दुःख एक नहीं



हे। वेदना को निर्जरा से शांत करें।

अध्यात्म और धर्म का चिंतन आदमी को शांति प्रदान कर सकता है। शरीर तो नश्वर है। आगे की तैयारी के रूप में आत्मा का कल्याण करने का प्रयास करें। जप-कायोत्सर्ग का प्रयोग करें। अध्यात्म साधना सर्व दुःखों को समाप्त करने वाली है। हम जीवन में शांति व समता रखने का प्रयास करें।

पूज्यप्रवर ने ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों को मंत्र दीक्षा प्रदान करते हुए फरमाया कि मंत्र दीक्षा सुंदर उपक्रम है। नवकार

मंत्र को कंठ में धारण कर लें। नवकार मंत्र धारण करने वाला जैन हो सकता है। नवकार मंत्र दिनचर्या में आ जाए। बाल्यावस्था में अच्छे संस्कार आ जाएँ। ज्ञानशाला से अच्छे संस्कार और प्रारंभिक ज्ञान दिया जा सकता है। पूज्यप्रवर ने मंत्र दीक्षा ग्रहण करवाई। मंत्र दीक्षा का आयोजन अभातेयुप के निर्देशन में किया जाता है। मंत्र दीक्षा के नियमों को भी समझाया और प्रेरणाएँ भी प्रदान की।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने कहा कि गुरुकुलवास में बच्चों को

संस्कारित बनाया जाता है। वर्तमान में ज्ञानशाला के माध्यम से बच्चों को संस्कारित बनाया जाता है। बच्चों को BEST के चार अक्षरों से सीख लेकर अपने जीवन को श्रेष्ठ बनाने के लिए प्रेरित किया।

साध्वीवर्या सम्बुद्धयशा जी ने कहा कि दो शब्द हैं—सत्य और भ्रम। दुनिया में सत्य कम और भ्रम अधिक है। हिंसा अनेक प्रकार की हो सकती है, मुख्य हिंसा है—क्रोधजा, मानजा, मायाजा और लाभजा। हम हिंसा से पाप कर्म का बंध

कर सकते हैं। सत्य को जीएँ, जागरूकता लाएँ।

पूज्यप्रवर ने महाप्राण ध्वनि का प्रयोग करवाया। २१ रंगी से संबंधित एवं अन्य तपस्वियों को तपस्या का प्रत्याख्यान करवाया। मुनि मोहजीत कुमार जी ने नौ की तपस्या के पूज्यप्रवर से प्रत्याख्यान लिए।

प्रवास व्यवस्था समिति से अध्यक्ष मदनलाल तातेड़ ने कार्यक्रम Transform और दिलीप सरावगी ने अनेक आगामी कार्यशालाएँ करने की जानकारी दी। डॉ० सौरभ जैन ने धार्मिक सम्मेलन के बारे में बताया।

पूज्यप्रवर ने फरमाया कि हमें असद् से सद् की ओर ट्रांसफॉर्मेशन करना है। अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान, जीवन विज्ञान से ट्रांसफॉर्मेशन घटित हो सकता है। ये कॉन्फ्रेंस अच्छा प्रभाव देने वाली हो।

ज्ञानशाला प्रशिक्षिकाओं एवं ज्ञानार्थियों ने मंत्र दीक्षा गीत का सुमधुर संगान किया। आंचलिक संयोजिका अनिता परमार ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। ज्ञानशाला द्वारा नवकार मंत्र, नुक्कड़ कार्यक्रम की प्रस्तुति दी गई।

प्रेक्षा प्रशिक्षक उपासक पारसमल दुग्ड़ ने तपस्या कैसे सातापूर्वक व सुविधा से हो, के प्रयोग समझाए व प्रयोग करवाए। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

जैसा कर्म होगा, वैसा फल मिलेगा : आचार्यश्री महाश्रमण



नंदनवन (मुंबई), ११ जुलाई, २०२३

अध्यात्म जगत के महासूर्य आचार्यश्री महाश्रमण जी ने भगवती सूत्र की व्याख्या करते हुए फरमाया कि कालोदयी अणुगार ने भगवान के पास आकर वंदन नमस्कार कर प्रश्न पूछा कि क्या पाप कर्म पाप युक्त फल देने वाले होते हैं। भगवान—हाँ वे ऐसे होते हैं। पाप कर्म में ऐसी शक्ति होती है कि वे समय आने पर पाप रूप में फल भी देते हैं। प्रश्न पर प्रश्न होने से उसे उदाहरण-दृष्टांत के द्वारा उस बात को स्पष्ट किया जाता है। कालोदयी-भगवन! यह कैसे हो सकता है?

भगवान ने कहा कि अटारह प्रकार के व्यंजनों का भोजन हंडिया में पका हुआ है, पर किसी ने उसमें विष मिला दिया। विष मिश्रित भोजन आनंद से खा रहा है। स्वादिष्ट भोजन का रस ले रहा है पर विष अपना असर दिखा रहा है, भयंकर परिणाम आए तो मौत भी आ सकती है। इसी प्रकार आदमी जब पाप करता है, तब तो उसे आनंद आ रहा है, पर जब उन कर्मों का फल भोगना पड़ता है, तो भयंकर दुःख भोगना पड़ता है।

कालोदयी-भगवन जीवों के कल्याण कर्म होते हैं, भगवन—हाँ होते हैं। भोजन

जो अटारह प्रकार के व्यंजनों से निर्मित हैं, उसमें औषधि मिला दी। भोजन के स्वाद में कड़वापन आ गया। आदमी भोजन कर रहा है, कड़वा स्वाद होते हुए भी औषधि मिली होने से उसका परिणाम अच्छा आता है। धर्म की साधना, त्याग करने से थोड़ी कठिनाई हो सकती है, पर उसका परिणाम अच्छा आता है। बुरे कर्मों का बुरा फल और अच्छे कर्मों का अच्छा फल मिलता है। इसलिए मनुष्य को हमेशा अच्छे कर्म कर पुण्य फल संचित करने का प्रयास करना चाहिए।

(शेष पृष्ठ २ पर)



ज्ञान का भंडार है भगवती सूत्र आगम : आचार्यश्री महाश्रमण



नंदनवन (मुंबई), ५ जुलाई, २०२३

अर्हत् वाङ्मय के उद्गाता आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि भगवती सूत्र हमारे आगमों में सबसे बड़ा आगम है। ग्यारह अंग आगम स्वतः ही प्रमाण वाली स्थिति के हैं। १२ उपांग इन ग्यारह से मिलते हुए हैं। कई बार निर्भरता की इसके कारण से ये ठीक है। ग्यारह अंग गरिमामय हैं।

प्रथम अंग आचारंग पर आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी ने संस्कृत में भाष्य लिखा है। बोलचाल की भाषा में भगवती ही बोलते हैं। ये आगम अर्द्ध मागधी-प्राकृत भाषा में है। वर्तमान में प्राकृत भाषा आम लोगों के लिए सुबोध नहीं है। इनकी छाया-टिप्पण संस्कृत-हिंदी भाषा में भी दिया गया है।

विभिन्न विषयों का ज्ञान इस आगम के पढ़ने से मिल सकता है। हमारे यहाँ

आगम एक गरिमापूर्ण स्थान रखने वाले होते हैं। वर्तमान में इसके सातवें अध्ययन के सातवें उद्देश्य का पाठ किया है। यह प्रश्नोत्तर के रूप में गौतम स्वामी से संबंधित है। भगवान भी बार-बार अपने शिष्य गौयमा गौयमा का नाम लेकर उत्तर दे रहे हैं।

प्रश्न किया गया भगवान्! काम रूपी होते हैं या अरूपी होते हैं। हमारी दुनिया में पाँच विषय हैं, जो इंद्रियों के द्वारा ग्रहीत होते हैं। शब्द, रूप, गंध, रस और स्पर्श—ये एक भौतिक जगत है। पाँच विषयों को दो भागों में बाँटा गया है—काम और भोग। शब्द और रूप की संज्ञा है काम और गंध, रस और स्पर्श की संज्ञा है भोग।

शब्द रूप की प्रकृति अलग है, गंध, रस, स्पर्श की प्रकृति अलग है। जिन विषयों की कामना की जाती है, किंतु संवेदन या अनुभव नहीं होता इसलिए वे काम कहलाते हैं। जो विषय संवेदन

उत्पन्न करते हैं या जिनका अनुभव होता है वे भोग कहलाते हैं। शब्द और रूप को जाना जा सकता है, पर अनुभव नहीं होता है। इंद्रियों प्राप्यकारी व अप्राप्यकारी भी होती हैं।

जैन दर्शन में केवल चक्षु को अप्राप्यकारी माना है शेष प्राप्यकारी होती हैं। काम शब्द और रूप रूपी हैं। काम सचित भी हो सकते हैं तो अचित भी हो सकते हैं। इनमें जो चैतन्य है, वह सचित है, चैतन्य रहित है, वे अचित हो जाते हैं। समनस्क प्राणी का रूप सचित है, असमनस्क का रूप अचित है, यह एक वृत्ति भी है। पर जीव सारे सचित ही होते हैं।

काम सजीव भी होते हैं और अजीव भी होते हैं। जीव ही देखेगा या सुनेगा। ऐसे ही भोग होते हैं। जीव कामी भी होते हैं और भोगी भी होते हैं। एक से तीन इंद्रिय वाले सिर्फ भोगी हैं। चतुरिन्द्रिय-पंचेन्द्रिय कामी-भोगी दोनों

होते हैं। ये तथ्यात्मक जानकारी आगमकार ने दे दी है। पर हम इन काम भोग का दुरुपयोग तो नहीं करते हैं। हम इनके उपयोग में भी संयम रखें। इनके प्रति राग-द्वेष का भाव न हो।

दो शब्द हैं—चाह और आवश्यकता। आवश्यकता हो सकती है, पर पदार्थ के प्रति चाह न हो। पूज्यप्रवर ने छापरे के बाद पुनः कालू यशोविलास के शेष भाग का वाचन शुरू किया। इसके चौथे खंड की व्याख्या करते हुए फरमाया कि गुरु का व्याख्यान किया जा सकता है। वि०सं० १८८० सुजानगढ़ चतुर्मास के प्रसंगों को समझाया।

पूज्यप्रवर ने २१ रंगी तप के संभागी तपस्वियों को प्रत्याख्यान करवाए। अन्य तपस्वियों को भी प्रत्याख्यान करवाए।

साध्वी समताप्रभा जी ने महिलाओं के कार्यक्रमों की सूचना दी।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

भगवान महावीर के दिखाए मार्ग पर चलें : आचार्यश्री महाश्रमण

नंदनवन (मुंबई), ४ जुलाई, २०२३

युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि भगवान महावीर इस भरत क्षेत्र के वर्तमान अवसरपिणी के चौबीसवें तीर्थंकर हुए। वीतराग पुरुष थे। केवलज्ञान, केवलदर्शन, क्षायिक सुख और निरंतरायता को प्राप्त हुए। अनेक गीतों और अष्टकों में भगवान महावीर की स्तुति की गई है।

भगवान की स्तुति में 'मैं महावीर तुम्हारे चरणों में'—यह गीत यदा-कदा गाया करता हूँ। इस गीत में श्रद्धा के भाव हैं। श्रद्धा के फूल प्रभु के चरणों में चढ़ाएँ। जिनके प्रति हमारी श्रद्धा है, उन्होंने जो उपदेश दिया है, उन बातों को जीवन में उतारो। आचरण अच्छा बनाओ तो गति अच्छी हो सकती है।

मुक्ति के लिए सम्यक् दर्शन, सम्यक् चारित्र भी अपेक्षित है। इन सबसे जीवन में ज्ञान-आचरण की ज्योति प्रज्वलित होगी। तपस्या और संयम मोक्ष प्राप्ति के शुभ साधन हैं। इसके साथ आराध्य चरण की आराधना हो, जिससे हम विकृतियों से मुक्त हो आत्म-विजय कर पाएँगे।

तप-संयम साधना का जो नियम लिया है, उसको दृढ़ता से निभाने का भी प्रयास रखो। नियम के प्रति निष्ठा रखें। साधुपन या श्रावकत्व को निभाने में हमारे प्राण भले चले जाएँ, पर नियमों के प्रति मनोबल मजबूत रहे। मन में कायरता न लाएँ। यश लोलुपता से साधना में बाधा न आ जाए। पद लोलुपता न हो, विकार व्यथा सताएँ नहीं, निष्कामता से सेवा का कार्य करें। स्व-पर कल्याण के लिए हम अपना जीवन अर्पित कर दें।

गुरु, देव और धर्म की शरण में लीन रहें। निर्भीक रहते हुए धर्म के मार्ग पर चलें। सच्चाई, अहिंसा, नैतिकता और नशामुक्ति की सद्-प्रेरणा लोगों को दें। सब प्राणियों के साथ मैत्री हो, किसी के प्रति वैर भाव न हो। मेरे में ईर्ष्या के मत्सर, अभिमान का भाव न जागे। जैसा कहता हूँ वैसा करता रहूँ, उसमें विषमता न हो। हे प्रभो! इस तरह हम अच्छे आचरण कर तुम्हारे पथ को, आचार्य भिक्षु के पथ को प्राप्त करें। भगवान के जीवन से हम प्रेरणा प्राप्त कर कल्याण के मार्ग पर आगे बढ़ सकते हैं।

चतुर्मास का पूर्वार्ध अध्यात्म की खुराक देने वाला हो। २१ रंगी तपस्या करने वालों को तपस्या के प्रत्याख्यान करवाए।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमार जी ने मनुष्य जीवन की महत्ता के बारे में समझाया।

बाह्य सुख में आसक्ति न रखें : आचार्यश्री महाश्रमण

नंदनवन (मुंबई), ७ जुलाई, २०२३

आगम वाणी व्याख्याता आचार्यश्री महाश्रमण जी ने भगवती सूत्र के ७वें शतक की व्याख्या करते हुए फरमाया कि नारकीय प्राणियों ने जो पाप कर्म किए हैं, करते हैं, करेंगे, वह दुःख है और जो कर्म निर्जरण हो गए हैं वह सुख है। शास्त्र में यह सुख-दुःख की आध्यात्मिक परिभाषा बताई गई है।

अनुकूल वेदनीय संवेदन सुख है, जो संवेदन प्रतिकूल होता है वह दुःख है। यह सुख-दुःख इंद्रिय जन्य बाह्य दुःख-सुख है। शास्त्रकार ने कहा है कि जो पाप कर्म जितने पहले किए, करते हैं, या करेंगे वे सब दुःख हैं। दुःख का बाप पाप कर्म है। यह आध्यात्मिक जगत के अनुसार है। निर्जरा कार्य है, तपस्या कारण है। वैसे ही पाप कारण है, दुःख कार्य है।

आत्मा तो अपने आप में सुख है, पाप कर्मों के कारण वह दुखी होती है। जिसकी दृष्टि में प्रकाश की क्षमता है तो फिर दीया जलाने की जरूरत क्या है। आत्मा अपने आपमें सुख है, फिर बाह्य दुःख की क्या अपेक्षा है। इस तरह सुख के दो प्रकार हो गए—आत्मिक सुख और इंद्रियजन्य बाह्य सुख।

मोहनीय कर्म या असातवेदनीय कर्म के उदय से दुःख आ सकता है। शब्द रूप

रस गंध से उत्पन्न होने वाला सुख अपारमार्थिक सुख है। पारमार्थिक सुख पाने के लिए अध्यात्म की साधना करनी होती है। तपस्या से, स्वाध्याय और सेवा से, ध्यान इंद्रिय संयम, काय क्लेश की साधना से दुःख दूर होते हैं। निर्जरा अपने आपमें सुख हो जाता है। हम बाह्य सुख में आसक्ति न रखें।

बाह्य सुख पूर्व पुण्य से मिलने वाले होते हैं, ये शाश्वत नहीं हैं। हम आगे के लिए पुण्य का संचय करने का प्रयास करें। पर मूल लक्ष्य तो हमारा आध्यात्मिक सुख प्राप्त करना है। चतुर्मास में धर्म-आराधना करने का प्रयास करें। कर्म निर्जरण करने

का प्रयास करें। संवर की साधना करें। पूज्यप्रवर ने कालू यशोविलास का सुंदर विवेचन करते हुए मारवाड़ के श्रावकों द्वारा पूज्य कालूगणी को मारवाड़ पधारने की अर्ज के प्रसंग को समझाया।

पूज्यप्रवर ने २१ रंगी तपस्या के सहभागी तपस्वियों को प्रत्याख्यान करवाए। तपस्या की प्रेरणा भी प्रदान करवाई।

समणी कुसुमप्रज्ञा जी ने अपनी भावना पूज्य चरणों में अभिव्यक्त की। उपासक श्रेणी के व्यवस्थापक जयंतिलाल सुराणा ने उपासक शिविर की जानकारी दी।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

जैसा कर्म होगा, वैसा फल...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

जो आत्मा के लिए हितकर होता है, वह शरीर के लिए कुछ कष्टकर हो सकता है। जो शरीर के लिए हितकर है, वह आत्मा के लिए कष्टकर हो सकता है। यह एक प्रसंग से समझाया कि पूर्व कृत पुण्य कर्म का वर्तमान में सुख मिल सकता है। कल्याण कर्म विपाक युक्त होते हैं।

परम पावन ने कालू यशोविलास का सुंदर विवेचन करते हुए पचपदरा में टालोकरो के प्रसंगों को विस्तार से समझाया। पूज्यप्रवर ने २१ रंगी तपस्या से संबंधित तपस्वियों को तपस्या के प्रत्याख्यान करवाए। उपासक श्रेणी के शिविरार्थियों को अच्छा प्रशिक्षण मिलता रहे।

मुनि दिनेश कुमार जी ने सवा कोटि जप अनुष्ठान के बारे में सूचना दी। मुनि राजकुमार जी ने २१ रंगी तपस्या की गीत से प्रेरणा दी। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

जीवन की जंग में विजय प्राप्त करने श्वाले मुनि अजय प्रकाश जी आज मात्र स्मृतियों में जीवन्त हैं। उनकी जीवन की पोथी के पन्ने एक-एक करके स्वयं ही पलट रहे हैं। अतीत को एक-एक पल आँखों के सामने विविध दृश्य बनकर उभर रहा है। उनके जीवन में अनेक ऐसे पड़ाव आए जहाँ मैंने उन्हें विविध रूपों में देखा। उनका विलासी रूप भी देखा तो वैराग्य का भी। स्नेह का संसार भी देखा और संयम में सजगता भी देखी। उनकी आहार रुचि भी देखी तो आहार त्याग की उत्कृष्टता भी देखी। सहृदयता भी देखी तो समता भी देखी। दूसरों के प्रति कोमलता भी देखी और स्वयं के प्रति कठोरता भी देखी। उनका जीवन विविधताओं को धारण किए हुए था। वो अजय से अजयप्रकाश बनकर मेरे लिए प्रेरणा के प्रकाश स्तंभ बन गए। आज भी अनेक प्रेरक स्वर मेरे कर्ण कुहर में अनुगूँजित हो रहे हैं—'बेटी! जिस मार्ग पर हम कदम बढ़ा रहे हैं, उससे कभी भी पीछे नहीं लौटना है। आज तो तुम्हारे साथ खड़ा हूँ पर आगे बढ़ने के बाद पुनः पीछे नहीं मुड़ना है। उनके ये प्रेरक बोल मेरे लिए सतत् आगे का मार्ग प्रशस्त करते रहें। भले आज वे सदेह मेरे समक्ष नहीं हैं। परंतु वे मेरी स्मृतियों में सदा अमर रहेंगे।

उन्होंने जीवन के अनेक पड़ावों को पार कर आखिर कार विजय पताका फहरा दी। उनके जीवन के ये मुख्य पड़ाव—

(9) प्रथम पड़ाव-गृहस्थ जीवन

अजय कुमार ने यौवन की दहलीज पर कदम रखते ही स्नेह के बंधन में बंध गए। सन् १९८६ में उनका पाणिग्रहण हुआ, पर पत्नी मंजु का साथ शीघ्र ही वियोग में बदल गया। मात्र ११ माह बाद ही वो दिवंगत हो गई। मन में विरक्ति का अस्फुट बीज वपन हुआ, परंतु काल का परिपाक नहीं हुआ इसलिए पुनः नई गृहस्थी बसानी पड़ी। इस बार उनका विवाह नगीना (साध्वी नीतिप्रभा) से हुआ। नगीना उनके जीवन को नया मोड़ देने ही आई थी। नगीना को अर्धांगिनी के रूप में प्राप्त कर अजय कुमार की दिशा एवं दशा दोनों ही बदल गई। देर रात तक दोस्तों के साथ रहना, जर्दा खाना, ताश खेलना आदि आदतें पत्नी के प्रयास से दूर होती गई। कालांतर में पुत्री खुशबू का जन्म हुआ।

(२) दूसरा पड़ाव - वैराग्य का वपन

ज्यों-ज्यों वैवाहिक जीवन व्यतीत होता गया त्यों-त्यों उनका झुकाव धर्म के प्रति बढ़ता गया। जीवन में संयम, सादगी आदि को तो स्थान मिला, पर दीक्षा लेने

विशेष लेख

संयम संग्राम के विजेता - मुनि अजय प्रकाश जी.

□ साध्वी तन्मयप्रभा □

का विकल्प नहीं उठा। उन्हें तो नीतिप्रभाजी की दीक्षा लेने की बात भी पसंद नहीं थी। परंतु नीतिप्रभा जी ने अपनी बेटी में वैराग्य के बीज बोए। माँ-बेटी अध्यात्म पथ पर बढ़ने हेतु आतुर थी। अजय उनका अगला प्रयास था अजय कुमार को भी तैयार कर सपरिवार दीक्षा लेना। एक दिन उन दोनों की वार्ता चल रही थी, तभी बेटी का समागम हुआ और कहा—पापा! आप मम्मी को क्यों रुलाते हो? हम दोनों की पक्की भावना है कि हम दीक्षा ही लेंगे, पर आप अकेले पीछे रहकर क्या करोगे? पत्नी का वर्षों का प्रयत्न बेटी के वाक्य से सफल हो गया। उस दिन उन्होंने निर्णय लिया कि मुझे वैराग्य, दीक्षा के पथ पर अग्रसर होना है।

(३) तीसरा पड़ाव - संन्यास का स्वीकरण

सन् २००२ का साल, दीवाली की छुट्टियों में सपरिवार गुरु दर्शनार्थ गए। अवसर देख आचार्य महाप्रज्ञ के चरणों में दीक्षा की भावना निवेदन की। उसी दिन संस्था प्रवेश की अनुमति भी प्राप्त हो गई। अब अजय कुमार भौतिक जीवन को छोड़कर सपरिवार भगवत्ता के पथ पर बढ़ने लगे। आखिर वर्षों की प्रतीक्षा का परिणाम आया और सूरत में आचार्य महाप्रज्ञ जी के शासनकाल में सपरिवार दीक्षित होकर मुनि अजय प्रकाश जी ने नव इतिहास का सृजन किया है। दीक्षा के पश्चात् जप, तप, स्वाध्याय आदि द्वारा संन्यास को सुनहरा बना दिया।

(४) चौथा पड़ाव - यात्रा (विहारचर्या)

मुनि जीवन का रसास्वादन करते हुए प्रथम चातुर्मास गुरु के सान्निध्य में किया। तदनंतर राजस्थान, महाराष्ट्र, कर्नाटक, तमिलनाडू आदि की यात्रा करते हुए तिन्नाण-तारयाण हेतु अपनी शक्ति व श्रम का नियोजन कर श्रावक समाज की संभाल हेतु दूर-दूर तक गोचरी जाना उन्हें आह्लादजनक लगता था। शहरों की गगनचुंबी इमारतों में भी उत्साह से गोचरी हेतु कई मंजिलों तक बढ़ते थे।

(५) पाँचवाँ पड़ाव - सेवा कार्य

जीवन के इस पड़ाव में उन्होंने बड़ी सजगता का परिचय दिया। दीक्षा के पश्चात् उसी साल गुरुदेव ने उन्हें छोटी खाटू में मुनि बच्छराज जी की सेवा में नियुक्त किया। वहाँ ३ वर्ष तक रहकर

तन, मन से सेवा कार्य का निर्वहन किया। तदनंतर जब उन्होंने आचार्य महाप्रज्ञ जी के दर्शन किए तब गुरुदेव ने मुझे इंगित कर फरमाया—तन्मयप्रभा! अजयप्रकाश जी ने ३ साल की चाकरी कर ली। अच्छी सेवा की है। क्या तुम्हें भेजते तो कर लेती? आचार्यप्रवर की प्रसन्नता व सेवाकार्य से संतुष्टि मेरे लिए हर्ष मिश्रित गौरव का विषय बन गई। धन्य होते हैं वे शिष्य, जो अपने कार्य से गुरु को प्रसन्न करते हैं।

(६) छठा पड़ाव - सहना ही धर्म (सहिष्णुता)

मुनि अजय प्रकाश जी ने सहिष्णुता, समता का जो आदर्श रूप प्रस्तुत किया, वह बेजोड़ है। असह्य व्याधि की स्थिति में भी उन्होंने समता की ज्योत को अखंड रखा। जब वे मुनि धर्मेशकुमार जी के साथ दक्षिण की यात्रा पर थे तब उनके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव हुआ। पता चला कि उनके पॉलिसिसिटिक किडनी है। डॉक्टर द्वारा चलने की मनाही करने पर भी उन्होंने मजबूत मनोबल से किसी भी सुविधा, वाहन का उपयोग नहीं किया। एक किडनी काम नहीं कर रही थी, फिर भी आपने ५ वर्ष तक फौलादी संकल्प से यात्रा की।

जब वे कोरोना की गिरफ्त में आए तब किडनी, लिवर आदि पर कोरोना का विशेष प्रभाव देखकर डॉक्टर ने बचने की संभावना कम बताई, पर गुरुकृपा से वो स्वस्थ हो गए। थोड़े ठीक हुए ही थे कि बैठक के स्थान पर व्रण हो गया। उठने-बैठने आदि में तकलीफ होने के बावजूद भी उनकी सहिष्णुता, उनकी प्रसन्नता बरकरार रहती थी। प्रायः पेट व पैर में सूजन रहती, दर्द भी रहता, चलते समय में साँस की तकलीफ भी होती, फिर भी जो समता का जीवन जीया, वो मेरे लिए प्रेरक है। अंतिम समय में भी बिना किसी हलचल के शांति की साधना की। उनकी वेदना के साथ-साथ उनकी समता भी प्रकर्ष को प्राप्त होती रही।

(७) सातवाँ पड़ाव - तप में तल्लीनता

उनकी तपरुचि दीक्षा के बाद उछालें भरने लगी। 'तवसा कम्म विज्जरइं' इस सूक्ति के अनुसार उन्होंने तप से अशुभ कर्मों की निर्जरा की। उनके उपवास, बेले की तो कोई गिनती नहीं है, अपने इस साधुकाल में ८ मासखमण, ४१ का तप १ बार, ११ तक की लड़ी १ बार, २१

माह तक २-२ बेले की तपस्या, १० वर्ष तक एकांतर तप—ये सब तपरुचि का ही परिणाम है। ६ माह में मासखमण व ४१ दिन का तप रसनाविजय का उदाहरण है।

जब भी उनके ठीक नहीं होता तो वे यही कहते कि मुझे संधारा बिना जाने मत देना। जब भी व्याधि सताती तो आपने डॉक्टर की अपेक्षा तप चिकित्सा को महत्त्व दिया। आपका तपोबल सदा प्रवर्धमान रहा। उनका यह तेजस्वी तप अनुष्ठान सदा आदर्श प्रस्तुत करता रहेगा।

उनका यह संकल्प था कि जब शरीर असमर्थ होने लगेगा तभी मैं अनशन के महासंग्राम में उतरूँगा। उन्होंने अंतिम समय में जिस उत्साह व चढ़ते परिणामों के साथ संलेखना एवं अनशन स्वीकार किया। उसी ऊर्ध्वगामी परिणामों के साथ आपने इस नश्वर देह का परित्याग किया।

(८) आठवाँ पड़ाव - संयम में सजगता

'ज्यों की त्यों धर दीनी चदरिया' संयम की यह चादर उन्होंने पूर्ण जागरूकता के साथ निर्मल बनाए रखी। वे किसी भी कीमत पर संयम में लघुता आने नहीं देते थे। जब कभी भी चिकित्सा आदि का प्रसंग आता तो उनका संकल्प था—(१) मैं अपनी बीमारी की बड़ी चिकित्सा नहीं कराऊँगा। (२) भिन्न समाचारी का प्रयोग नहीं करूँगा।

इन दोनों संकल्पों को सजगता की स्थिति में पूर्ण रूप से निभाया। बेहोशी की हालत में एक बार वाहन का प्रयोग हुआ पर सजगता की स्थिति में उन्हें यह गँवारा नहीं था। भीलवाड़ा का एक प्रसंग मेरे स्मृति पटल पर उभर रहा है—सूर्योदय से १५ मिनट पूर्व सूचना आई कि मुझे संतों के ठिकाणे शीघ्रातिशीघ्र बुलाया है। २-३ बार यह सूचना आने पर मेरा मन उद्वेलित हो गया। सूर्योदय होते ही मैं अजय प्रकाश जी के कमरे के बाहर पहुँची तो देखा कि उनको स्ट्रेचर पर लाया जा रहा था। मुँह खून से सना हुआ था, शरीर पूरा अचेतवत। यह दृश्य देखते मैं कंपित होने लगी। भीतर में १ ही प्रश्न-७ साल

तक जिसकी सेवा का इंतजार कर रही थी, क्या यह मन ही मन में रह जाएगी। इत्यादि विकल्प आने लगे। वो एम्बुलेंस से रवाना हो गए। इधर मैं और नीतिप्रभाजी गुरुदेव के उपपात में पहुँचे। स्थिति ऐसी जटिल बनी कि डॉक्टर ने बाहर से ही देखकर कहा—जान नहीं, भर्ती नहीं करेंगे। पर उनका तपोबल, गुरुबल का प्रभाव ही था लोगों ने हिम्मत कर एक बार जबरदस्ती भर्ती कर दिया।

कुछ प्रयत्नों के बाद होश आया। इसी दौरान गुरुदेव ने मुझे व नीतिप्रभा जी को ५ दिन तक हॉस्पिटल जाने की अनुमति प्रदान की। वे धीरे-धीरे स्वस्थ हुए। मेरे मन में एक चिंता थी कि अगर उन्हें वाहन प्रयोग का पता चलेगा तो वेदना होगी, चारित्र में छेद असह्य है। ज्योंहि यह गुरुदेव को निवेदन किया तब उनको लाने की व्यवस्था हस्तचालित यंत्र से हुई। ५ दिन बाद वे ठीक होकर आ गए।

गुरुकृपा एवं अनेक संकल्प का ही परिणाम था कि एंबुलेंस का प्रयोग करने पर विधानतः १ माह का छेद आता परंतु कुछ दिन बाद आचार्यप्रवर ने नियम बताया कि यदि बेहोशी की अवस्था में वाहन का प्रयोग होता है तो छेद नहीं आएगा। आखिर उन्होंने अपनी संयम चादर को उज्ज्वल और निश्छिद्र बनाए रखा।

मुनि अजय प्रकाश जी अनेक पड़ावों की सुखद यात्रा कर परम यात्रा की ओर प्रस्थित हो गए। वे सदा गुरुद्वय की करुणा से अभिस्नात रहे। गुरु अनुग्रह का प्रसाद है कि मेरे निवेदन पर साध्वी नीतिप्रभा जी एवं मुनि अजय प्रकाशजी को भीलवाड़ा में चातुर्मास में साथ रखा।

उन्होंने ज्योतिर्मय जीवन जीया पर नियति का योग ऐसा बना कि ६ तारीख को वह ज्योति सदा-सदा के लिए अदृश्य हो गई। उनके जाने का गम भी है और उन्होंने गुरुदृष्टि की अनुपालना करते हुए ज्ञान-दर्शन-चारित्र की निर्मल आराधना की। इसका सात्त्विक हर्ष भी है उनके जीवन के ये पड़ाव प्रकाशपुंज बनकर मुझे सदा अलौकिक आलोक देते रहेंगे। अब वे सिर्फ नामशेष, यथाशेष, कथाशेष रह गए हैं।

उनकी आत्मा ऊर्ध्वगामी हो मोक्ष का वरण करें। यही हृदय की अनंत गहराईयों से मंगलकामना।

◆ वे व्यक्ति महान् होते हैं, जो दूसरों की भलाई के लिए स्वयं कष्ट झेलने के लिए तत्पर रहते हैं।

— आचार्यश्री महाश्रमण



॥ महिला मंडल के विविध आयोजन ॥

आचार्यश्री तुलसी का २७वाँ महाप्रयाण दिवस तिरुपुर।

अभातेमम के तत्त्वावधान में तेममं द्वारा आचार्यश्री तुलसी का २७वाँ महाप्रयाण दिवस 'विसर्जन दिवस' के रूप में पूरे तेरापंथ समाज के साथ आयोजित किया गया। कार्यक्रम का प्रारंभ नमस्कार महामंत्र के द्वारा किया गया। मंगलाचरण तुलसी अष्टकम् द्वारा किया गया।

कार्यक्रम के अगले चरण में ११ मिनट तक सामूहिक जप किया गया। संतोष आंचलिया द्वारा १० मिनट तक ध्यान के द्वारा विसर्जन प्रयोग कराए गए।

मुख्य वक्ता उपासिका संजू दुगड़ ने अनासक्त चेतना का विकास विसर्जन का करें प्रयास पर अपने भावों की प्रस्तुति दी। उन्होंने बताया कि हमें अपने कषायों का विसर्जन करने का प्रयास करना चाहिए। ताकि हमारा मोक्ष मार्ग प्रशस्त बने।

सभा के सदस्यों ने भी गुरुदेव तुलसी को अपनी भावांजलि अर्पित की। मंडल की बहनों ने गीत के द्वारा अपने भावोद्गार प्रस्तुत किए। कार्यक्रम का संचालन नीता सिंधी ने किया। आभार ज्ञापन मंत्री प्रीति भंडारी ने किया।

रूपांतरण शिल्पशाला के अंतर्गत 'लेश्या' कार्यशाला का आयोजन तिरुपुर।

अभातेमम के तत्त्वावधान में तिरुपुर महिला मंडल द्वारा रूपांतरण शिल्पशाला के अंतर्गत 'लेश्या' कार्यशाला

का आयोजन किया गया। कार्यशाला का प्रारंभ नमस्कार महामंत्र से किया गया। पूनम कोठारी द्वारा प्रेरणा गीत का संगान किया गया। अध्यक्षा सीमा सामसुखा ने सभी का स्वागत किया।

कार्यशाला की मुख्य वक्ता तत्त्व प्रचेता उपासिका निहारिका कोठारी रही। उन्होंने लेश्या के बारे में समझाया। उन्होंने बताया कि हमें हमेशा अप्रशस्त लेश्या से प्रशस्त लेश्या की ओर बढ़ना है। इसीलिए उन्होंने कई प्रयोग भी करवाए। कार्यक्रम का संचालन एवं आभार ज्ञापन मंत्री प्रीति भंडारी ने किया।

समृद्ध राष्ट्र योजना के अंतर्गत शौचालय का निर्माण चेन्नई।

समृद्ध राष्ट्र योजना के अंतर्गत तेममं, चेन्नई के तत्त्वावधान में विजय नेल्लुर स्कूल में दो शौचालय का निर्माण कर उद्घाटन किया गया। नमस्कार महामंत्र के सामूहिक स्मरण के साथ अध्यक्षा पुष्पा हिरण ने उनके अध्यक्षीय कार्यकाल के २ वर्ष में जितने भी प्रोजेक्ट किए उसकी जानकारी प्रस्तुत की। नारंगीबाई गांधी ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

स्कूल की प्रिंसिपल मैडम ने भी अपने विचार व्यक्त किए। महिला मंडल के प्रति आभार व्यक्त किया। शौचालय के निर्माण के सहयोग के रूप में नारंगीबाई गांधी, उमेद बेताला एवं मंजु लुंकड़ का सहयोग प्राप्त हुआ। इस प्रोजेक्ट की देखरेख में संयोजिका संगीता खटेड़ का विशेष श्रम रहा।

फिजियोथेरेपी सेंटर की सार-संभाल शौचालय उद्घाटन के बाद महिला मंडल ने अभातेमम के निर्देशन में तेममं, चेन्नई द्वारा संचालित फिजियोथेरेपी सेंटर की सार-संभाल की। वहाँ पर सभी स्टॉफ का सम्मान किया गया। फिजियोथेरेपी सेंटर की देखरेख में संयोजिका निर्मला छल्लणी का सहयोग मिल रहा है, इस अवसर पर उन्होंने भी अपने विचार व्यक्त किए।

तत्त्व संबोध स्टडी सेंटर में क्लास का आयोजन राजराजेश्वरी नगर, बेंगलोर।

अभातेमम द्वारा निर्देशित तत्त्व संबोध स्टडी सेंटर क्लास का आयोजन मुनि दीप कुमार जी के सान्निध्य में किया गया। अध्यक्ष लता बाफना ने मुनिश्री जी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की एवं आर०आर० नगर में संचालित स्टडी सेंटर के बारे में जानकारी प्रदान करते हुए विचारों की अभिव्यक्ति दी।

मुनि दीप कुमार जी ने कहा कि २५ बोल जैन धर्म की एक छोटी डिक्शनरी है। जिसमें जैन धर्म का सार समाहित है। जैन धर्म को आत्मसात करने के लिए २५ बोल सीखने अति आवश्यक है। राजेश्वरी नगर की बहनों की उपस्थिति को देखते हुए मुनिश्री ने प्रशंसा व्यक्त करते हुए कहा कि यहाँ बहनों को तत्त्व ज्ञान में रस आ रहा है। बहनों के लिए मंगलकामना करते हुए कहा कि बहनों इसी प्रकार नियमित स्वाध्याय करते हुए अध्यात्म की ओर आगे से आगे बढ़ती रहें। प्रशिक्षिका कंचन छाजेड़ ने २५ बोल के प्रथम बोल में नरक गति, तिर्यंच गति एवं मनुष्य गति को विस्तार से समझाया।

शपथ ग्रहण एवं मंत्र दीक्षा का आयोजन कानपुर।

साध्वी संगीतश्री जी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन, कानपुर में तेयुप शपथ ग्रहण समारोह संपन्न हुआ। जिसमें अध्यक्ष पद के लिए पुनः दिलीप मालू को तेरापंथी सभा, कानपुर के अध्यक्ष धनराज सुराणा द्वारा शपथ दिलाई गई। तत्पश्चात अध्यक्ष ने नई टीम को शपथ दिलाई। इसी क्रम में तेरापंथ महिला मंडल का भी शपथ ग्रहण समारोह साध्वीश्री जी के सान्निध्य में संपन्न हुआ, जिसमें पुनः शालिनी बुच्चा को अध्यक्ष पद की शपथ दिलाई गई, जिसके बाद उन्होंने अपनी नई कार्यकारिणी टीम को शपथ दिलाई।

अभातेयुप के निर्देशन में तेयुप, कानपुर द्वारा मंत्र दीक्षा का आयोजन साध्वी संगीतश्री जी के सान्निध्य में किया गया। जिसमें बच्चों को मंत्र दीक्षा दिलवाई एवं जीवन में इसका क्या महत्त्व होगा, वो भी सरल शब्दों में समझाया गया।

ज्ञानशाला के बच्चों द्वारा एक लघु नाटिका के माध्यम से मंत्र दीक्षा की महत्ता का वर्णन किया गया, जिसकी तैयारी ज्ञानशाला प्रशिक्षिका प्रभा मालू व प्रियंका भूतोड़िया द्वारा करवाई गई।

ज्ञानशाला के बच्चों को प्रतिदिन २१ नवकार महामंत्र के जप करने के संकल्प के साथ शराब, मांस, अंडों का सेवन नहीं करने एवं बीड़ी, सिगरेट, पान-मसाला व जर्दा का प्रयोग नहीं करने के साथ माता-पिता व गुरुजनों के प्रति विनम्र रहने व अपशब्द या गाली का प्रयोग नहीं करने का संकल्प साध्वी संगीतश्री जी द्वारा दिलाया गया।

इस अवसर पर तेरापंथ समाज वाराणसी के कुछ सदस्य उपस्थित रहे, जिनका सम्मान साध्वीश्री जी की सन्निधि में महिला मंडल द्वारा किया गया।

तेरापंथ समाज के मेधावी बच्चों आयुषी सेठिया (१०वीं कक्षा) एवं श्वेता बुच्चा (डॉक्टर) के लिए समाज की ओर से अध्यक्ष धनराज सुराणा एवं मंत्री संदीप जम्मड़ द्वारा सम्मानित किया गया।

तेयुप, कानपुर के अध्यक्ष दिलीप मालू, प्रत्युष सुराणा, श्रेयांश सुराणा, सारांश मणोत, सौरभ बोथरा आदि ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई।

शपथ ग्रहण एवं मंत्र दीक्षा का संचालन हर्ष बोथरा द्वारा किया गया व तेयुप मंत्री राहुल बुच्चा ने साध्वीश्री जी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की एवं ज्ञानशाला परिवार के प्रति मंत्र दीक्षा समारोह के लिए आभार जताया।

अणुव्रत समिति का गठन एवं प्रेस कॉन्फ्रेंस का आयोजन

सिरियारी।

आचार्यप्रवर द्वारा घोषित अणुव्रत वर्ष के उपलक्ष्य में स्वामी जी की साधना व अनशन स्थली सिरियारी में पहली बार अणुव्रत का आगाज हुआ। मुनि आकाश कुमार जी व मुनि हितेंद्र कुमार जी की प्रेरणा व पहल से सिरियारी संस्थान के करीब ३० से ज्यादा स्टॉफ ने अणुव्रत के नियमों को स्वीकार किया तथा संस्थान से जुड़े हुए पत्रकार प्रकाश परिहार को सर्वसम्मति से अध्यक्ष चुन लिया गया तथा डॉ० बी०एल० शर्मा को उपाध्यक्ष का दायित्व दिया गया।

अध्यक्ष प्रकाश परिहार ने अपनी टीम की घोषणा की। कार्यक्रम में उपस्थित अणुव्रत महासमिति के पूर्वाध्यक्ष अशोक डूंगरवाल ने उन्हें शपथ दिलाई तथा अणुव्रत के बारे में विस्तार से उद्भव और विकास के बारे में समझाया।

मुनि आकाश कुमार जी ने अणुव्रत क्या है? और इसकी अपेक्षा क्यों है? तथा हमें अणुव्रत क्यों अपनाना चाहिए। विषय पर संक्षेप व सारगर्भित वक्तव्य दिया। मुनि हितेंद्र कुमार जी ने सरल भाषा में अणुव्रत को विश्लेषित किया। तथा ज्यादा से ज्यादा अणुव्रती बनने की प्रेरणा दी। शपथ ग्रहण के अगले दिन अणुव्रत समिति द्वारा प्रेस कॉन्फ्रेंस का आयोजन किया गया, जिसमें पत्रकारों सहित अनेक लोगों ने अणुव्रत के नियम स्वीकार किए। इस प्रेस कॉन्फ्रेंस में सिरियारी ठाकुर मल्लिनाथ सिंह सरपंच दीक्षिता कंवर आदि की विशेष उपस्थिति रही।

आभार ज्ञापन संस्थान के मैनेजर महावीर सिंह ने किया।

आचार्य भिक्षु जन्म महोत्सव व बोधि दिवस का आयोजन

मालवीय नगर, जयपुर।

शासन गौरव साध्वी कनकश्री जी के सान्निध्य में आचार्यश्री भिक्षु का २६८वाँ जन्म महोत्सव व २६६वाँ बोधि दिवस तेरापंथी सभा, जयपुर द्वारा अणुविभा केंद्र में मनाया गया। सायर बागरेचा ने मंगलाचरण किया।

शासन गौरव बहुश्रुत साध्वी कनकश्री जी ने आचार्यश्री भिक्षु को विनयांजलि अर्पित करते हुए कहा कि संत भीखणजी ज्योति का उपहार

लेकर जन्मे और ज्योति का प्रसाद निरंतर बाँटते रहे। जन्म के समय एक दाँत और मधुर मुस्कान उस बात का प्रतीक था कि वे विश्व के लिए मंगलकारी सिद्ध होंगे।

राजनगर में बोधि प्राप्ति के प्रसंगों को प्रस्तुत करते हुए साध्वीश्री जी ने कहा कि आप महान आत्मार्थी संत थे। आपके प्रखर बुद्धि वैभव, विवेक व सत्य मार्ग पर चलने के अदम्य साहस ने धर्मरूपी निर्मल गंगा में फैले प्रदूषण को

साफ कर दिया।

शासन गौरव साध्वीश्री द्वारा रचित गीतिका का साध्वी मधुलता जी आदि साध्वियों ने संगान किया। साध्वी मधुलेखा जी व साध्वी समितिप्रभा जी ने वक्तव्य द्वारा भावाभिव्यक्ति दी। सभा के उपाध्यक्ष सुरेश बरड़िया ने कविता द्वारा तथा ज्ञानार्थी निश्चय बरड़िया ने गीतिका द्वारा आस्थासिक्त प्रस्तुति दी। साध्वी मधुलता जी ने कार्यक्रम का संचालन किया।

चातुर्मासिक मंगल प्रवेश एवं स्वागत समारोह

सुनाम।

तेरापंथी सभा, सुनाम के तत्वावधान में साध्वी कनकरेखा जी के चातुर्मासिक मंगल प्रवेश पर स्वागत समारोह का समायोजन किया गया। तेरापंथी सभा, तेयुप, तेममं, अणुव्रत समिति, कन्या मंडल व ज्ञानशाला सभी अपने-अपने गणवेश में जैन ध्वज तले जय नारों के साथ रैली की शोभा बढ़ा रहे थे। साध्वीश्री जी के आगमन पर सभी में नया जोश, नया उत्साह दिखाई दे रहा था। शहर के मुख्य मार्ग से होती हुई रैली परिषद के रूप में परिणत हो गई।

कार्यक्रम का शुभारंभ आगमवाणी के साथ साध्वी गुणप्रेक्षाश्री जी, साध्वी संवरविभा जी, साध्वी केवलप्रभा जी, साध्वी

हेमंतप्रभा जी ने किया।

साध्वी कनकरेखा जी ने कहा कि तेरापंथ धर्मसंघ प्राणवान धर्मसंघ है, इसकी व्यवस्था मर्यादा व अनुशासन की शीतल छाया में हमारी संयम यात्रा गतिशील है, गुरुदेव के इंगित अनुसार हमने प्रवास प्रवेश किया। ५ महीने के इस पावस में अधिक से अधिक लाभ उठाकर अंतर यात्रा करें, पंचाचार की आराधना करें, तप, त्याग के साथ आपने हमारा सच्चा स्वागत किया और भी साधना के क्षेत्र में विकास करना है।

इस अवसर पर सभा अध्यक्ष रामस्वरूप पंजाब प्रांतीय सभा अध्यक्ष केवल कृष्ण रामलाल, तेयुप अध्यक्ष

अरिहंत जैन, महिला मंडल अध्यक्ष पुष्पा जैन, सोना जैन, सभा मंत्री सुरेश जैन ने अपने भावों के साथ साध्वीश्री जी का अभिनंदन किया।

कार्यक्रम के मुख्य वक्ता डॉ० अमित कंसल ने कहा कि मुझे बहुत प्रसन्नता हो रही है, मैं तेरापंथ की साध्वीश्री जी का तेहदिल से स्वागत करता हूँ। साध्वीश्री जी के आगमन पर रात्रि भोजन नहीं करने का संकल्प करता हूँ।

अनुशासन के साथ अणुव्रत रैली का आयोजन रहा। मंच संचालन रविंद्र जैन ने किया। सुमित जैन ने साध्वीश्री जी का परिचय प्रस्तुत किया।



संस्कृति का संरक्षण - संस्कारों का संवर्द्धन जैन विधि - अमूल्य निधि

नूतन गृह प्रवेश

वाशी।

तेयुप अध्यक्ष महावीर सोनी-हेमलता सोनी का नूतन गृह प्रवेश जैन संस्कार विधि द्वारा संस्कारक पवन परमार ने संपूर्ण विधि-विधान द्वारा नमस्कार महामंत्र, मंगल मंत्रों के उच्चारण के साथ गृह प्रवेश संपादित करवाया।

तेयुप, वाशी की ओर से संस्कारकद्वय ने आध्यात्मिक शुभकामनाएँ प्रेषित कर मंगलभावना यंत्र प्रदान किया।

पूर्वांचल-कोलकाता।

सादुलपुर निवासी-पूर्वांचल-कोलकाता प्रवासी अभिषेक सिंधी का नूतन गृह प्रवेश जैन संस्कार विधि द्वारा उपासक एवं संस्कारक विजय कुमार बरमेचा व सह-संस्कारक मनोज कोचर ने संपूर्ण विधि-विधान द्वारा नमस्कार महामंत्र, मंगल स्तोत्रों के उच्चारण के साथ गृह प्रवेश कार्यक्रम संपादित करवाया।

पूर्वांचल-कोलकाता की ओर से कार्यकारिणी सदस्य श्रेयांश भंसाली ने मंगलमय भविष्य की शुभकामनाएँ प्रेषित कर मंगलभावना यंत्र प्रदान किया। जैन संस्कार विधि के प्रभारी प्रभात चंडालिया एवं संयोजक श्रेयांश भंसाली, जयंत बरड़िया, संदीप जैन और हर्षित मालू जैन संस्कार विधि के प्रचार-प्रसार में सक्रिय रहे।

विजयनगर।

श्वेता एवं उनके सुपुत्र आयान जैन के नूतन गृह प्रवेश का कार्यक्रम जैन संस्कार विधि से संपन्न हुआ। कार्यक्रम में तेयुप, विजयनगर से विकास बांठिया एवं श्रेयांस गोलछा ने संस्कारक की भूमिका का निर्वहन करते हुए विधि-विधान एवं मंगल मंत्रोच्चारण से कार्यक्रम को संपन्न करवाया।

परिषद की ओर से मंगलभावना पत्रक भेंट किया गया। श्वेता ने जैन संस्कार विधि की सराहना की एवं संस्कारकों के प्रति आभार जताया।

पूर्वांचल-कोलकाता।

बीकानेर निवासी, पूर्वांचल-कोलकाता प्रवासी महेंद्र भंसाली के सुपुत्र गौरव भंसाली का नूतन गृह प्रवेश उपासक एवं संस्कारक सुरेंद्र सेठिया और अनूप गंग ने संपूर्ण विधि-विधान द्वारा संपन्न करवाया।

तेयुप की ओर से उपाध्यक्ष-२ धनपत बरड़िया, सहमंत्री-२ लोकेश दुगड़ ने मंगलमय भविष्य की शुभकामनाएँ प्रेषित कर मंगल भावना पत्रक प्रदान किया। साथ ही भंसाली परिवार के प्रति आभार ज्ञापित किया।

विवाह संस्कार

गंगाशहर।

गंगाशहर निवासी चंचल देवी-राजेंद्र सेठिया की सुपुत्री गरिमा का शुभ विवाह गंगाशहर निवासी रसवंती-स्व० सुशील पटवा के सुपुत्र प्रतीक के साथ जैन संस्कार विधि से संपन्न हुआ। जैन संस्कारक धमेन्द्र डाकलिया, पवन छाजेड़ और देवेन्द्र डागा ने विवाह संस्कार विधि-विधानपूर्वक तथा मांगलिक मंत्रोच्चारण द्वारा संपन्न करवाया।

इस अवसर पर उपस्थित दोनों परिवारों की तरफ से जैन संस्कारकों का आभार प्रकट किया। कार्यक्रम में गणमान्य जनों और पारिवारिक लोगों की उपस्थिति रही।

सैंथिया।

सैंथिया निवासी मनोज चोरड़िया के सुपुत्र रौनक चोरड़िया का शुभ विवाह तनुजा रॉय सुपुत्री विजय कृष्ण रॉय के साथ ऋषभ भवन, सैंथिया में जैन संस्कार विधि से संपादित हुआ।

जैन संस्कारक प्रकाश सुराणा ने संपूर्ण मंगल मंत्रोच्चारण एवं विधि-विधान से विवाह संस्कार परिसंपन्न करवाया। वृहद मंगलपाठ के बाद संस्कारक द्वारा परिजनों को मंगलभावना पत्रक प्रदान किया गया।

आचार्यश्री तुलसी - मानवता के मसीहा

फरीदाबाद।

आचार्यश्री तुलसी का २७वाँ महाप्रयाण दिवस जैन स्थानक, फरीदाबाद में उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमल कुमार जी के सान्निध्य में मनाया गया। मुनिश्री ने गुरुदेव तुलसी के २७वें महाप्रयाण दिवस पर श्रावक समाज को उपवास, एकासन, रात्रि भोजन त्याग और सामायिक पचरंगी करने की प्रेरणा दी और श्रावक समाज ने बढ़-चढ़कर आध्यात्मिक त्याग तपस्या की।

मुनि अमन कुमार जी व मुनि नमि कुमार जी ने अपनी अभिव्यक्ति दी। आचार्यश्री तुलसी की महत्त्वपूर्ण शिक्षाओं को जीवन में अमल करने पर बल दिया।

कार्यक्रम की शुरुआत महिला मंडल की बहनों द्वारा मंगलाचरण के संगान से हुई। फरीदाबाद सभा के अध्यक्ष गुलाबचंद

बैद, टीपीएफ के अध्यक्ष राकेश सेठिया, अणुव्रत समिति के अध्यक्ष आई०सी० जैन, तेयुप के अध्यक्ष विवेक बैद, बहादुर दुगड़ व दिल्ली सभा के अध्यक्ष सुखराज सेठिया ने भी अपने विचारों द्वारा आचार्यश्री तुलसी को भावभीनी श्रद्धांजलि दी। फरीदाबाद ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने श्री तुलसी अष्टकम् व एक नाटिका के द्वारा श्रावक समाज को त्याग, तपस्या की प्रेरणा दी।

स्थानकवासी समाज के अध्यक्ष रविंद्र जैन ने मुनि कमल कुमार जी का अभिनंदन किया। इस अवसर पर कुलभूषण जैन ने अपने डीपी०एस स्कूल में नवनिर्मित ऑडिटोरियम का नाम गुरुदेव आचार्यश्री तुलसी के नाम पर रखने की घोषणा करते हुए साथ में जैन समाज के जरूरतमंद ५ बच्चों को हर वर्ष निःशुल्क शिक्षा की भी घोषणा की। मंच संचालन सभा मंत्री संजीव बैद ने किया।

आजीवन तिविहार संधारा के प्रत्याख्यान

जालना।

श्रद्धानिष्ठ श्रावक स्व० बिरदीचंद सेठिया के ज्येष्ठ पुत्र एवं शांतिलाल सेठिया (उम्र ८२) जिनको दिनांक १४-६-२०२३, दोपहर २:०७ मिनट पर उपासिका रूपा धोका द्वारा सागारी संधारे के प्रत्याख्यान करवाए गए। दिनांक १६-६-२०२३ को सुबह ६:३८ पर आजीवन तिविहार के प्रत्याख्यान करवाए गए। स्वास्थ्य स्थिर है तथा उच्चतम भावों के साथ अपने लक्ष्य की ओर प्रवर्धमान हैं।



अभातेयुप योगक्षेम योजना

अभातेयुप प्रबंध मंडल सत्र - 2019-2021	51,00,000
* श्री बच्छावत परिवार, सरदारशहर-जयपुर	5,00,000
* श्री बसंत अर्पित नाहर, महेंद्रगढ़-उधना	5,00,000
* श्री राकेश कठोटिया, लाडनू-मुंबई	5,00,000
* श्री रूपचंद कोडामल जैनसुख दुगड़, बीदासर-मुंबई	5,00,000
* श्री शंकरलाल विमल विनीत पितलिया, भीलवाड़ा	5,00,000
* श्री शांतिलाल पारसमल दक उमरी, उधना-सूरत	5,00,000
* श्री सुमतिचंद गोठी, सरदारशहर-मुंबई	5,00,000
* श्री विपिन जैन पारख, सिरसा-मुंबई	5,00,000
* श्री राजकुमार गौतम प्रसाद जैन, बेलपाड़ा-उड़ीसा	5,00,000
* श्री सागरमल दीपक विमल कमलेश श्रीमाल, देवगढ़-बड़ौदा	5,00,000
* श्री जैनसुख दीपक बोथरा, छपर-सिलीगुड़ी	5,00,000
* श्री बसंत नवलखा, बीकानेर	5,00,000
* श्री बिमल चोपड़ा, गंगाशहर-यमुनानगर	5,00,000
* श्रद्धानिष्ठ श्रावक केशरीमल, अनिलकुमार, संजयकुमार, सुनीलकुमार चंडालिया (गंगापुर) सूरत	5,00,000
* श्री छत्तरमल गणेशमल विनीतकुमार बैद, राजलदेसर-चेन्नई	5,00,000



मनोनुशासनम्

□ आचार्य तुलसी □



(क्रमशः)

- (२०) कंठकूप में वायु को धारण करने से भूख और प्यास पर विजय प्राप्त होती है।
(२१) जिह्वाग्र में वायु को धारण करने से रस का ज्ञान प्राप्त होता है।
(२२) नासाग्र में वायु को धारण करने से गंध का ज्ञान प्राप्त होता है।
(२३) चक्षुओं में वायु को धारण करने से रूप का ज्ञान प्राप्त होता है।
(२४) कपाल में वायु को धारण करने से क्रोध उपशांत होता है।
(२५) ब्रह्मरन्ध्र में वायु को धारण करने से चर्म चक्षुओं द्वारा अदृश्य वस्तुएँ देखने लग जाती हैं।

वायु-विजय के लाभ

महर्षि पतंजलि ने उदान और समान दोनों के विजय के लाभ बतलाए हैं। उनके योगदर्शन में शेष वायुओं के विजय के लाभ की कोई चर्चा नहीं है। उनके अनुसार संयम के द्वारा उदान वायु के जय से शरीर हल्का हो जाता है। फिर वह पानी में नहीं डूबता। उसके पैर कीचड़ में नहीं फँसते। कंटों में भी नहीं उलझते। मरण के समय उसकी ब्रह्मरन्ध्र के द्वारा प्राणों के निकलने से ऊर्ध्वगति होती है—

उदानजयाज्जलपंककण्टकादिष्वसंग उत्क्रांतिश्च ॥

(पातंजल योगदर्शन-विभूतिपाद, ३६)

संयम के द्वारा समान वायु का विजय कर लेने पर साधक का शरीर दीप्तिमान हो जाता है—

समानजयाज्ज्वलनम् ॥

(पातंजल योगदर्शन-विभूतिपाद, ४०)

उत्तरवर्ती योगग्रंथों में अन्य वायुओं के जय से होने वाले लाभों का वर्णन मिलता है। नौवें से बारहवें सूत्र तक उनका निरूपण किया गया है। तेरहवें सूत्र में प्राणायाम की एक विशेष प्रक्रिया का निरूपण किया गया है। आचार्य हेमचंद्र के योगशास्त्र तथा याज्ञवल्क्य गीता में इसका विस्तृत वर्णन मिलता है।

उक्त प्राणायाम की प्रक्रिया इस प्रकार है—साधक पद्मासन या सिद्धासन लगाकर बैठे। फिर वह रोचक प्राणायाम करें। उसके बाद बायें नथुने से पूरक प्राणायाम करें और प्राण को पैरों के अंगूठे तक ले जाएँ। वहाँ संकल्पपूर्वक कुंभक करें। फिर प्राणवायु को क्रमशः पैरों के तलुवे, एड़ी, टखने, जंघा, घुटने, ऊरु, गुदा, लिंग, नाभि, उदर, हृदय, कंठ, जीभ, तालु, नासाग्र, नेत्र, भौंह, ललाट और सिर तक ले जाएँ। वहाँ से उसे ब्रह्मरन्ध्र में ले जाएँ। फिर उल्टे क्रम से प्राणवायु को पैरों के अंगूठे तक ले जाएँ। फिर पैरों के अंगूठे से उसे नाभि तक लाकर उसका विरेचन कर दें। इस प्रक्रिया के मध्य वायु को धारण करने से होने वाले लाभ चौदहवें से पचीसवें सूत्र तक बतलाए गए हैं।

(२६) आस्थाबंधो दीर्घकालासेवनं नैरन्तर्यं कर्मविलयश्चात्र हेतुः ॥

(२७) मनोनुशासनाद् अतीन्द्रियोपलब्धिः ॥

(२६) दृढ़ आस्थायुक्त, प्रतिदिन, लंबे समय तक उक्त स्थानों में संकल्पपूर्वक कुंभक करने तथा कर्म-पुद्गलों का विलय होने से ही ये शक्तियाँ प्राप्त होती हैं।

(२७) मन के अनुशासित होने पर अतीन्द्रिय ज्ञान की प्राप्ति होती है। मनोनुशासन का अंतिम फल अतीन्द्रिय ज्ञान की उपलब्धि या स्वभाव की उपलब्धि है।

सिद्धि की प्रक्रिया

योग-साधना से होने वाली उपलब्धियों का वर्णन मनुष्य के सामान्य ज्ञान से परे की वस्तु है। साधारणतया जीवन में ऐसा घटित नहीं होता किंतु मन की एकाग्रता के द्वारा कुछ ऐसा घटित होता है, जिसकी मानसिक चंचलता की स्थिति में कल्पना भी नहीं की जा सकती। हमारे शरीर के भीतर कुछ ऐसे शक्ति-स्रोत विद्यमान हैं। जिनका चैतसिक चंचलता की स्थिति में कोई उपयोग नहीं होता। एकाग्रता की स्थिति में वे स्रोत उद्घाटित हो जाते हैं और वे शरीर में विशेष प्रकार की रासायनिक क्रिया उत्पन्न करते हैं। उनके द्वारा असंभव प्रतीत होने वाले परिवर्तन सहज ही घटित हो जाते हैं, किंतु यह कुछ ही दिनों में घटित नहीं होता। इसकी सिद्धि के चार उपाय हैं—

(१) आस्था बंध, (२) दीर्घकालिक अभ्यास, (३) निरंतर अभ्यास, (४) कर्मविलय।

साधना में दृढ़ आस्था हुए बिना सफलता संभव नहीं होती। उसके होने पर भी यदि अभ्यास दीर्घकाल तक न चले तो सफलता संभव नहीं है। दीर्घकालिक अभ्यास होने पर भी यदि वह निरंतर न चले, उस स्थिति में साधक सफल नहीं हो सकता। इन सबके होने पर भी बंधन-विलय से प्राप्त योग्यता अपेक्षित रहती है। इन सबका समुचित योग होने पर जो असंभव प्रतीत होता है, वह संभव बन जाता है।

उक्त उपलब्धियों से भी अधिक महत्त्वपूर्ण होती है अतीन्द्रिय ज्ञान की उपलब्धि। स्थूल मन की एकाग्रता होने पर वह भी घटित हो जाती है।

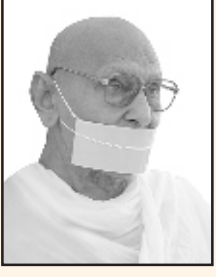
छठा प्रकरण

- (१) सर्वथा हिंसाऽनृतस्तेयाऽब्रह्मपरिग्रहेभ्यो विरतिर्महाव्रतम् ॥
(२) सर्वभूतेषु संयमः अहिंसा ॥
(३) कायवाङ्मनसामुजुत्वमविसंवादित्वञ्च सत्यम् ॥
(४) परोपरोधाकरणमस्तेयम् ॥

- (५) वस्तीन्द्रियमनसामुपशमो ब्रह्मचर्यम् ॥
(६) बाह्ये मनसोऽनिवेशनमपरिग्रहः ॥
(७) आलोके भोजनं पानञ्च ॥
(८) भूमिं प्रतिवीक्षमाणो गच्छेत् ॥
(९) प्रतिलेखनप्रमार्जनपूर्वकमुपकरणानामादाननिक्षेपं कुर्यात् ॥
(१०) क्रोध-लोभ-भय-हास्यानि वर्जयेद् अनुविचिन्त्य आचक्षीत ॥
(११) अवग्रहानुज्ञां परिपालयेत् ॥
(१२) ब्रह्मचर्यघातिसंसर्गेन्द्रियप्रयोगं विवर्जयेत् ॥
(१३) प्रियाप्रिययोर्न रज्येद् न द्विष्याद् न च देहमध्यासीत् ॥
(१४) स्थूलहिंसाऽनृतस्तेयाऽब्रह्मपरिग्रहविरतिरनुव्रतम् ॥
(१५) क्षमा-मार्दव-आर्जव-शौच-सत्य-संयम-तपस्त्याग-आकिंचन्य-ब्रह्मचर्याणि श्रमणधर्मः ॥
(१६) क्रोधनिग्रहः क्षमा ॥
(१७) हीनानामपरिभवनं मार्दवम् ॥
(१८) माया-निरोध आर्जवम् ॥
(१९) शौचमलुब्धता ॥
(२०) सत्यम् ॥
(२१) हिंसादिप्रवृत्तेरुपरमणं संयमः ॥
(२२) कर्म-निर्जरणहेतु पौरुषं तपः ॥
(२३) संविभागकरणं त्यागः ॥
(२४) स्वदेहे निःसंगता आकिंचन्यम् ॥
(२५) ब्रह्मचर्यम् ॥

- (१) हिंसा, असत्य, चोरी, अब्रह्मचर्य और परिग्रह—इनका सर्वथा त्यागने का नाम महाव्रत है। सर्वथा त्यागने का अर्थ है—मनसा, वाचा, कर्मणा हिंसा आदि स्वयं न करना, दूसरों से न कराना और करते हुए का अनुमोदन न करना।
(२) प्राणी मात्र के प्रति संयम—अपनी असत्-प्रवृत्तियों की रुकावट रखना, उन्हें कष्ट न पहुँचाना तथा उनके प्रति मैत्री रखना अहिंसा है।
(३) शरीर, वाणी और मन की ऋजुता तथा अविसंवादित्य (कथनी और करनी की एकरूपता) को सत्य कहा जाता है।
(४) दूसरों के स्वर का हरण न करने को अस्तेय कहा जाता है।
(५) जननेन्द्रिय, इंद्रिय-समूह और मन की शांति को ब्रह्मचर्य कहा जाता है।
(६) बाह्य (आत्मा से अतिरिक्त वस्तुओं) में मन का संबंध न करने को अपरिग्रह कहा जाता है।
(७) योग-अभ्यासी को भोजन-पान आलोक में (सूर्य के रहते हुए ही) करना चाहिए।
(८) उसे भूमि को देखते हुए चलना चाहिए।
(९) स्थान को देख, उसे साफ कर उपकरणों को उठाना और रखना चाहिए।
(१०) उसे क्रोध, लोभ, भय और हास्य-कुतूहल का वर्जन करना चाहिए। और सोच-समझकर बोलना चाहिए।
(११) रहने के स्थान की उसके स्वामी की अनुज्ञा ले, उसका सम्यक् पालन करना चाहिए।
(१२) ब्रह्मचर्य का घात करने वाले संसर्ग का वर्जन करना चाहिए। वासना को उभारने वाले व्यक्तियों के साथ नहीं रहना चाहिए। वैसे स्थान और आसन का भी वर्जन करना चाहिए। चक्षु, स्पर्शन, जीभ और श्रोत्र का उच्छृंखल प्रयोग नहीं करना चाहिए।
(१३) इंद्रियों के प्रिय विषयों में आसक्ति और अप्रिय विषयों में द्वेष नहीं करना चाहिए। उसे देहाध्यास का त्याग करना चाहिए।
(१४) स्थूल हिंसा, असत्य, चौर्य, अब्रह्मचर्य और परिग्रह—इनकी विरति को अनुव्रत कहा जाता है।
(१५) श्रमण-धर्म दस प्रकार का है—
(१) क्षमा, (२) मार्दव, (३) आर्जव, (४) शौच, (५) सत्य, (६) संयम, (७) तप, (८) त्याग, (९) आकिंचन्य, (१०) ब्रह्मचर्य।
(१६) क्रोध के निग्रह को क्षमा कहा जाता है। जो आक्रोश और ताड़ना को सहन करना है, उसके कर्म-संस्कार क्षीण होते हैं। जो सहन नहीं करना, उसके कर्म-संस्कार संचित होते हैं, इसलिए आने वाले क्रोध का निग्रह करो और जो क्रोध आ गया, उसे विफल करो।

(क्रमशः)



संबोधि

□ आचार्य महाप्रज्ञ □ बंध-मोक्षवाद

मिथ्या-सम्यग्-ज्ञान-मीमांसा

भगवान् प्राह

(२६) स्वाख्यातमेतदेवास्ति, सत्यमेतत् सनातनम्।
सदा सत्येन संपन्नो, मैत्री भूतेषु कल्पयेत्॥

यह स्वाख्यात धर्म है, यही सनातन सत्य है कि व्यक्ति सदा सत्य से संपन्न बने और सब जीवों के प्रति मैत्री का व्यवहार करे।

(२७) वैरी करोति वैराणि, ततो वैरेण रज्यति।
पापोपगानि तानीह, दुःखस्पर्शानि चान्तशः॥

वैरी वैर करता है और वैर करते-करते उसमें रक्त हो जाता है। वैर पापार्जन् का हेतु है और अंत में उसका परिणाम दुःखस्पर्शी होता है।

मेरी सबके साथ मैत्री है किसी के साथ विरोध नहीं है, इस मानसिक शुद्धि के बिना मैत्री नहीं होती। जहाँ कहीं हमारा प्रेम अथवा द्वेष है वहाँ मैत्री नहीं है। हम शत्रु से सशक्त रहते हैं और मित्रों की चिंता करते हैं। जो विश्व को मित्र मानता है वह अभय होता है। समाधि अभय व्यक्ति को प्राप्त होती है। प्रतिशोध की भावना में वैरा झलकता है। वैर का परिणाम दुःखमूलक है।

(२८) स हि चक्षुर्मुष्पाणां, कांक्षामन्तं नयेत यः।
लुठति चक्रमन्तेन, बहत्यन्तेन च क्षुरः॥

वह मनुष्यों का चक्षु है, जो आकांक्षा का अंत करता है। चक्का अंत-छोर से चलता है। उस्तरा अंत-धार से चलता है।

(२९) धीरा अन्तेग गच्छन्ति, नयन्त्यन्तं ततो भवम्।
अन्तं कुर्वन्ति दुःखानां, संबोधिरतिदुर्लभा॥

धीर पुरुष अंत से चलते हैं—हर वस्तु की गहराई में पहुँचते हैं। इसलिए वे भव का अंत पा लेते हैं, दुःखों का अंत करते हैं। इस प्रकार की संबोधि प्राप्त होना अत्यंत दुर्लभ है।

(क्रमशः)

अवबोध

□ मंत्री मुनि सुमेरुमल 'लाडनू' □

कर्म बोध

प्रकृति व करण

प्रश्न २६ : संलग्न आकाश प्रदेश स्थित पुद्गलों से अधिक पुद्गल वर्गणा को ग्रहण करना हो, तो वहाँ क्या होगा?

उत्तर : संलग्न आकाश प्रदेश का तात्पर्य मात्र एक आकाश प्रदेश नहीं, उसके पार्श्ववर्ती आकाश प्रदेश भी एक-दूसरे से लंनग्न है, वहाँ के पुद्गल ग्रहण कर लेते हैं। मध्यवर्ती आकाश प्रदेश छोड़कर उससे आगे के आकाश प्रदेशों पर स्थित पुद्गल वर्गणा को ग्रहण नहीं कर सकते।

प्रश्न ३० : काल कारण किसे कहते हैं?

उत्तर : कर्म पुद्गलों को ग्रहण करने में जितना समय लगता है तथा वे पुद्गल जिसने समय तक आत्मा के साथ जुड़े रहेंगे, उसे काल कारण कहते हैं।

प्रश्न ३१ : भव करण किसे कहते हैं?

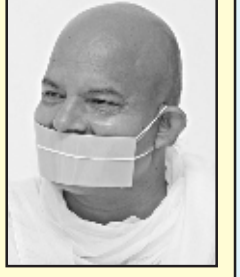
उत्तर : गृहीत कर्म वर्गणा जिस भव में भोगी जाती है, उसे भव करण कहते हैं।

प्रश्न ३२ : एक कर्म की वर्गणा अधिकतम कितने भव तक भोगी जा सकती है?

उत्तर : आठ कर्मों में एक आयुष्य कर्म की वर्गणा मात्र एक भव में भोगी जाती है, शेष सात कर्मों की वर्गणा एक भव या अनेक भवों तक भोगी जा सकती है। इसकी निश्चित संख्या नहीं होती। पर उस काल में जितने भव करता है, उतने भव तक उस कर्म वर्गणा को भोगना होता है। कर्म बंध का अधिकतम कालमान सत्तर करोड़ाकरोड़ सागरोपम है। उसके भोगने में असंख्य भव लग सकते हैं।

(क्रमशः)

उपासना



(भाग - एक)

□ आचार्य महाश्रमण □

जैन जीवनशैली

अनेकांत

जैन जीवनशैली का दूसरा सूत्र है—अनेकांत। अनेकांत बहुत बड़ा दर्शन है। हम इस दर्शन को अपने जीवन की शैली बनाएँ। पारिवारिक और सामुदायिक जीवन में अनेक व्यक्ति साथ होते हैं। ऐसे में रुचिभेद, विचारभेद, चिंतनभेद स्वाभाविक है। सब लोग एक रुचि वाले, एक विचार वाले और एक दृष्टि से सोचने वाले हों, यह संभव नहीं। जहाँ इस तरह के भेद हों, वहाँ टकराव और संघर्ष भी होंगे। इसे अस्वीकार नहीं किया जा सकता। प्रश्न है—क्या आदमी सदैव संघर्ष का ही जीवन जीएगा? सदा लड़ता-झगड़ता और मरता-मारता ही रहेगा? नहीं, ऐसे जीवन को बदला जा सकता है अनेकांत की जीवनशैली के द्वारा। हम निश्चित मानें—जहाँ अनेक हैं, वहाँ सहअस्तित्व भी है। साथ में रहना है, साथ में जीना है। विरोध है, किंतु विरोध नहीं भी है, सहअस्तित्व के बीज भी उस भूमि में बोय हुए हैं। हम उन सहअस्तित्व के बीजों को अंकुरित करने का प्रयास करें। सहअस्तित्व के लिए आवश्यक है—एक-दूसरे की भावना को समझें, एक-दूसरे के विचारों का मूल्यांकन करें। मैं अपने विचारों को सत्य मानता हूँ, दूसरा अपने विचारों को सत्य मानता है। अनेकांत के पथदर्शन किया—‘तुम अपने विचारों को सत्य मानो, किंतु दूसरे के विचारों में भी सच्चाई खोजने का प्रयत्न करें।’ यदि यह मार्ग उपलब्ध होता है, तो सहअस्तित्व की आधार-भूमि निर्मित हो जाती है। हर व्यक्ति अपने विचारों को कैसे सत्य मानता है, दूसरों के विचारों को भी कैसे ही सत्य मानने लगे तो झगड़ा शांत होगा, संघर्ष टल जाएगा।

अनेकांत ने एक सूत्र दिया—समन्वय करो। भिन्न-भिन्न विचारों और मान्यताओं में कितना समन्वय हो सकता है और समन्वय के किन-किन सूत्रों को खोजा जा सकता है, यह चिंतन की बात है।

अनेकांत का एक सूत्र है—सापेक्षता। तुम्हारा जीवन सापेक्ष है। तुम निरपेक्ष नहीं हो। हर व्यक्ति दूसरों की अपेक्षा रखता है। एक आदमी रोटी खाता है इसके पीछे कितनों का श्रम जुड़ा है। कोई बीज बोता है, कोई फसल तैयार करता है, कोई उसकी कटाई करता है, कोई उसके प्रतिफल को बाजार में लाता है, कोई उस अनाज की पिसाई करता है, कोई उसकी रोटी बनाता है, तब उसे कोई खाता है। कितने-कितने लोगों का श्रम जुड़ा है, तब कहीं रोटी आदमी के मुँह तक आती है। हमारा पूरा जीवन सापेक्ष है। बड़ा हो या छोटा, सापेक्षता से कोई अलग नहीं हो सकता। यदि आदमी निरपेक्ष होकर बैठ जाए तो उसका जीना मुश्किल हो जाएगा। व्यक्ति की सभी आवश्यकताओं पर विचार करें तो हजारों का श्रम जुड़ता है, तब कहीं जाकर उसकी आवश्यकताओं की पूर्ति होती है। इतना सापेक्ष है जीवन। इस अवस्था में झूठा अहंकार कर व्यक्ति स्वयं को निरपेक्ष मानता है और यह निरपेक्ष दृष्टिकोण ही झंझट और कलह पैदा करता है।

अनेकांत की जीवनशैली एक विनम्र जीवनशैली है। उसमें सापेक्षता है, समन्वय है, सहअस्तित्व है। ये सारे सूत्र जहाँ काम करते हैं, वहाँ एक सार्थक जीवन होता है। यह सूत्र हमारे सामने जीवन की सार्थकता को प्रस्तुत करता है, जीवन को आनंदमय बना देता है।

अहिंसा

जैन जीवनशैली का तीसरा सूत्र है—अहिंसा। न मारना अहिंसा है, किंतु यह अहिंसा की समग्र परिभाषा नहीं है। अहिंसा की पृष्ठभूमि में दया, करुणा, मैत्री तथा समत्व की अनुभूति है। जो व्यक्ति आत्मिक धरातल पर नहीं जीता, आत्मा की अनुभूति नहीं करता, वह अहिंसा का आचरण नहीं कर सकता। मैं अहिंसा के शिखर को छूने की बात नहीं कर रहा हूँ, किंतु एक बहुत व्यावहारिक बात कर रहा हूँ। सामाजिक जीवन में न्यूनतम इतनी अहिंसा तो होनी ही चाहिए और वह है अनावश्यक हिंसा का परित्याग। एक सामाजिक प्राणी जीता है। उसके जीवन में कुछ अनिवार्य हिंसा होती है। हम इसे अस्वीकार नहीं करेंगे, हिंसा का हम समर्थन भी नहीं करेंगे किंतु इस सच्चाई को स्वीकार करके चलें कि अनिवार्य हिंसा होती है। जो व्यक्ति अहिंसा के क्षेत्र में प्रविष्ट होना चाहता है, सामाजिक जीवन में अहिंसा का मूल्य आँकता है, अहिंसक समाज की दिशा में प्रस्थान करना चाहता है और यह चाहता है कि समाज हिंसा, अराजकता और आतंक का अखाड़ा न बने, उसके लिए एक न्यूनतम आचार-संहिता के कि वह अनावश्यक हिंसा न करे।

(क्रमशः)

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के आयोजन

चेन्नई

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर जेटीसी विद्यालय, साहुकारपेट, चेन्नई में योग-ध्यान, महाप्राण ध्वनि, योगाभ्यास करवाया गया। इस अवसर पर विद्यालय अध्यापकों के साथ अणुव्रत क्रिएटिव प्रतियोगिता की दक्षिण भारत प्रभारी सुभद्रा लुणावत, स्वरूपचंद दांती ने विविध प्रयोग बताते हुए उनके लाभ और नियमित रूप से करने की प्रेरणा दी।

इस अवसर पर गत वर्ष अणुव्रत क्रिएटिव प्रतियोगिता-२०२२ के विजेता, प्रतिभागी विद्यार्थियों को प्रमाण पत्र वितरित किए गए।

साउथ कोलकाता

मुनि जिनेश कुमार जी को क्रीड़ा भारती द्वारा राजभवन के सामने रानी रासमणी रोड़ पर आयोजित अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस में आशीर्वचन हेतु आमंत्रित किया गया। जिसमें पश्चिम बंगाल के राज्यपाल सी०वी० आनंद बोस मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। हजारों की संख्या में उपस्थित विद्यार्थियों एवं गणमान्य नागरिकों को भगवान महावीर एवं योग पर संबोधित करते हुए मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा कि योग कल्पवृक्ष, चिंतामणि रत्न की तरह श्रेष्ठ व सब धर्मों में प्रधान है।

योग सिद्ध हो जाने पर अन्य ग्रह स्वतः सिद्ध हो जाते हैं। योग, दुःख को दूर करने वाला है। योग से तन-मन स्वस्थ होता है। भगवान महावीर ने योग को

कायक्लेश तप में समाहित किया है। उन्होंने ध्यान एवं योग साधना के माध्यम से केवल ज्ञान की सिद्धि प्राप्त की। क्रीड़ा भारती द्वारा आयोजित अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का कार्यक्रम विद्यार्थियों में एक नई प्रेरणा भरें, यह अपेक्षित है।

राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ एवं क्रीड़ा भारती द्वारा भगवान महावीर के निर्वाण के २५५०वें वर्ष के उपलक्ष्य में भगवान महावीर के सिद्धांतों एवं जीवन दर्शन की आयोजनों में चर्चा करना बहुत अच्छी बात है। आयोजकों द्वारा मुनिश्री का परिचय भी दिया गया। तेरापंथ जैन समाज द्वारा राज्यपाल का सम्मान किया गया।

औरंगाबाद

मुनि अर्हत कुमार जी के सान्निध्य में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के उपलक्ष्य में योग शिविर आयोजित किया गया। इसमें मुनिश्री ने युवकों को काफी योग प्रयोग करवाए और योग के द्वारा युवकों को फिट रहने के लिए प्रेरित किया। मुनिश्री ने कहा कि योग करने से आप स्वस्थ एवं तंदुरुस्त रहेंगे।

मुनिश्री ने सभी युवकों को प्रतिदिन योग करने के लिए प्रेरणा दी। तेयुप अध्यक्ष अंकुर लुणिया ने मुनिश्री का आभार व्यक्त किया।

साउथ हावड़ा

साउथ हावड़ा तेरापंथी सभा एवं अभातेयुप के तत्वावधान में फिट युवा-हित युवा के अंतर्गत अंतर्राष्ट्रीय योग

दिवस के उपलक्ष्य पर तेयुप ने योग कार्यशाला का आयोजन सभा भवन में किया। कार्यशाला के मुख्य प्रशिक्षक संजय पारख ने सभी को नियमित योग करने एवं अपने आपको स्वस्थ रखने की प्रेरणा दी।

प्रशिक्षक द्वारा संपूर्ण शरीर को स्वस्थ रखने के लिए अनेक योग मुद्राओं का प्रयोग करवाया गया। कार्यशाला में श्रावक समाज की अच्छी उपस्थिति रही। योग धर्म नहीं, विज्ञान है। योग शरीर, मन और आत्मा को जोड़ने का विधान है। योग दिवस पर सभा के निवर्तमान अध्यक्ष सुशील गिड़िया, उपाध्यक्ष बजरंगलाल डागा, सहमंत्री मनोज कोचर, कपिल धारीवाल एवं परिषद के अध्यक्ष गगन दीप बैद ने अपनी भावना रखी। इस कार्यशाला में श्रावक समाज की अच्छी उपस्थिति रही।

राजाजीनगर

तेरापंथ योग एंड मेडिटेशन केंद्र, राजाजीनगर की ओर से योग कार्यक्रम योगा, ध्यान एवं प्रायाणाम का आयोजन ईस्ट वेस्ट पार्क में किया गया। योग गुरु देवराज सर ने विविध प्रकार के योग, आसन का अभ्यास कराते हुए योग की महत्ता बताई और कहा कि योग से कई बीमारियों से हम निजात पा सकते हैं। निरोग और स्वस्थ रह सकते हैं।

इस अवसर पर तेयुप निवर्तमान अध्यक्ष अरविंद गन्ना, नव मनोनीत अध्यक्ष कमलेश गन्ना, सुनील मेहता और तेयुप सदस्यों की सहभागिता रही।

टीपीएफ द्वारा 'ऊर्ध्वारोहण' कार्यक्रम का आयोजन

कृष्णा नगर, दिल्ली।

तेपोमूर्ति मुनि कमल कुमार जी के सान्निध्य में टीपीएफ 'फाउंडेशन डे' के उपलक्ष्य में 'ऊर्ध्वारोहण-टीपीएफ तब से अब तक' का तेरापंथ भवन, कृष्णा नगर में आयोजन हुआ। टीपीएफ नोर्थ जोन द्वारा आयोजित आयोजन में टीपीएफ, दिल्ली के आतिथ्य में फरीदाबाद, गुरुग्राम, नोएडा, यू०पी० (गाजियाबाद) का संयुक्त आयोजन रहा।

कार्यक्रम में मुनि कमल कुमार जी ने प्रोफेशनल्स को मार्गदर्शन दिया तथा सभी प्रोफेशनल को इन रत्नों की माला से आज ही जुड़ने का आह्वान किया। इस अवसर पर टीपीएफ गौरव, के०सी० जैन, टीपीएफ गौरव, संपतमल नाहटा ने अपने अनुभव साझा किए तथा आगे की राह के बारे में बताया। राष्ट्रीय मीडिया संयोजक श्रील लुंकड़ ने मुख्य वक्ता के रूप में टीपीएफ के गठन के बारे में व अब तक के सफर से सभी को अवगत कराया। नोएडा अध्यक्ष प्रसन्न सुराणा, फरीदाबाद अध्यक्ष राकेश सेठिया, दिल्ली उपाध्यक्ष पांची जैन, गाजियाबाद कोषाध्यक्ष जैन रूप सुराणा, नोर्थ जोन उपाध्यक्ष अजय संचेती ने SHINE से सभी को अवगत कराया। स्वागत भाषण नोर्थ जोन अध्यक्ष विजय नाहटा ने दिया एवं आभार ज्ञापन नवनीत जैन व संचालन नोर्थ जोन मंत्री भरत बेगवानी ने किया।

इसी कार्यक्रम के साथ मुमुक्षु विपुल जैन का मंगल भावना समारोह भी आयोजित किया गया। मुनिश्री ने इस अवसर पर दीक्षार्थी के लिए शुभकामनाएँ दी। मुमुक्षु विपुल जैन ने वक्तव्य, भिवानी से एडवोकेट सुरेंद्र जैन ने मुमुक्षु का जीवन परिचय एवं गांधीनगर सभा अध्यक्ष कमल गांधी ने स्वागत वक्तव्य दिया। संजय चोरड़िया, राष्ट्रीय फेमिना, सह-संयोजिका डॉ० आरती कोचर, नंदलाल जैन, हेमा चोरड़िया, दिल्ली सभा अध्यक्ष सुखराज सेठिया, गांधीनगर सभा मंत्री हेमराज राखेचा, विकास मंच के अध्यक्ष दीपचंद सुराणा, महामंत्री महेंद्र श्यामसुखा, टीपीएफ परिवार एवं दिल्ली एनसीआर शाखाओं के श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति में कार्यक्रम संपादित हुआ।

रक्तदान शिविर का आयोजन

बेहाला

तेयुप बेहाला एवं बीएपीएस स्वामीनारायण मंदिर, जोका के संयुक्त तत्वावधान में बीएपीएस स्वामीनारायण मंदिर में आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी के 9०४वें जन्म दिवस के अवसर पर रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया।

नमस्कार महामंत्र के सामूहिक उच्चारण के साथ ही इस शिविर की शुरुआत हुई। बेहाला सभा व महिला मंडल के सदस्यों ने भी अपनी उपस्थिति से सबका मनोबल बढ़ाया। कुल 9३२ यूनिट रक्त संग्रह हुआ।

ब्लड बैंक सरोज गुप्ता कैंसर रिसर्च हॉस्पिटल का सराहनीय सहयोग रहा। स्वामीनारायण मंदिर के स्वामी प्रबुद्ध योगीदास जी ने भी रक्तदान किया एवं सभी का उत्साह बढ़ाया। राहुल लोढ़ा एवं महिमा कोठारी ने अपने जीवन का प्रथम रक्तदान किया एवं समय-समय पर इस महादान का हिस्सा बनने का प्रण किया।

आचार्य भिक्षु जन्म दिवस एवं तेरापंथ स्थापना दिवस

राजाजीनगर।

आचार्यश्री भिक्षु का २६८वाँ जन्म दिवस व २६४वाँ तेरापंथ स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में धम्म जागरण का आयोजन तेयुप राजाजीनगर के सहमंत्री जयंतीलाल गांधी के निवास स्थान बसवेश्वरानगर में रात्रिकालीन धम्म जागरण का आयोजन हुआ।

धम्म जागरण की शुरुआत नमस्कार महामंत्र से हुई। तेयुप अध्यक्ष कमलेश गन्ना ने सभी का स्वागत करते हुए अपने आराध्य के प्रति अभ्यर्थना व्यक्त की। धम्म जागरण में संजय मांडोत, महेश भंसाली एवं चेतन गांधी ने अपनी सुमधुर आवाज से वातावरण को भिक्षुमय बनाते हुए श्रोताओं को उत्साहित किया।

इस अवसर पर तेयुप प्रबंध मंडल कार्यकारिणी सदस्य एवं श्रावक-श्राविका समाज की अच्छी उपस्थिति रही। कमलेश चोरड़िया ने आभार व्यक्त किया।

शपथ ग्रहण समारोह का आयोजन

विजयनगर।

तेयुप, विजयनगर के नव मनोनीत अध्यक्ष राकेश पोखरणा एवं उनकी नव मनोनीत टीम का शपथ ग्रहण का आयोजन मुनि दीप कुमार जी के सान्निध्य में जैन संस्कार विधि के द्वारा विजयनगर स्थित अर्हम भवन में संपन्न हुआ।

विजय स्वर संगम की टीम द्वारा मंगलाचरण से कार्यक्रम की शुरुआत हुई। अभातेयुप महामंत्री पवन मांडोत ने श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन किया। परिषद निवर्तमान अध्यक्ष श्रेयांस गोलछा ने पधारें हुए सभी अतिथियों का स्वागत किया एवं नव मनोनीत अध्यक्ष राकेश पोखरणा को अध्यक्ष पद और गोपनीयता

की शपथ दिलाई। तत्पश्चात राकेश पोखरणा ने अपने प्रबंध मंडल एवं कार्यसमिति की घोषणा की एवं सभी को शपथ दिलाई।

इस अवसर पर मुनिश्री जी ने मंगल आशीर्वचन देते हुए नव मनोनीत टीम को शुभकामनाएँ प्रेषित की। उपस्थित श्रावक समाज एवं युवाओं को जप-तप से जुड़ने के लिए प्रेरित किया।

अभातेयुप राष्ट्रीय महामंत्री पवन मांडोत अभातेयुप प्रबुद्ध विचारक दिनेश पोखरणा, तेरापंथ सभा, विजयनगर अध्यक्ष प्रकाश गांधी, सुरेश मांडोत, महिला मंडल अध्यक्ष प्रेमबाई भंसाली, अणुविभा सोसायटी के दक्षिण संगठन मंत्री राजेश चावत ने नवनिर्वाचित टीम को

शुभकामना प्रेषित की।

शपथ ग्रहण समारोह के आयोजन में अभातेयुप पूर्व अध्यक्ष विमल कटारिया, अभातेयुप परिवार, तेयुप, विजयनगर के पूर्व अध्यक्ष, क्षेत्रीय तेयुप परिषद, तेरापंथी सभा, महिला मंडल, ज्ञानशाला, विजयनगर परिषद, राजस्थान परिषद, अर्हम मित्र मंडल, तेयुप विजयनगर के पदाधिकारी और सदस्य उपस्थित रहे। संचालन तेयुप के पूर्व अध्यक्ष अमित दक ने किया।

संस्कारक की भूमिका पूर्व अध्यक्ष एवं संस्कारक राकेश दुधेड़िया, अभिषेक कावड़िया, विकास बांठिया, आशीष सिंधी, धीरज भादानी, पवन बैद ने निभाई।



पीतमपुरा, दिल्ली

खिलौनी देवी धर्मशाला, पीतमपुरा में आयोजन को संबोधित करते हुए शासनश्री सासध्वी रतनश्री जी ने कहा कि आचार्यश्री तुलसी एक दूर द्रष्टा आचार्य थे। उन्होंने परिवार, समाज, देश और राष्ट्र निर्माण के लिए अनेक अवदान दिए, उनमें एक अवदान है—मंत्र दीक्षा।

वृक्ष के लिए बीज का महत्त्व है। विशाल भवन निर्माण के लिए एक-एक ईंट का महत्त्व है। उसी प्रकार परिवार, समाज निर्माण के लिए एक-एक बालक का महत्त्व है। प्रारंभ से ही उसके जीवन में सुसंस्कारों का बीजारोपण करना चाहिए, जिससे वे भविष्य में देश और राष्ट्र का नाम रोशन कर सकें।

मंत्र दीक्षा में नमस्कार महामंत्र के समुच्चारण के साथ कुछ संकल्प दिए जाते हैं। जैसे—नशीले पदार्थों का सेवन नहीं करूँगा, मैं माता-पिता, गुरुजनों के प्रति विनम्र रहूँगा, मैं गाली व अपशब्द का प्रयोग नहीं करूँगा, मैं प्रतिदिन नमस्कार महामंत्र का कम से कम २१ बार जप करूँगा।

साध्वीश्री जी के समक्ष बच्चों ने खड़े होकर इन संकल्पों को दोहराया।

शासनश्री साध्वी सुव्रताजी ने कहा कि बच्चे घर की शान और मृदु मुस्कार होते हैं। बच्चों के सरल हृदय में भगवान का निवास होता है। तेयुप ने यह एक सुंदर अभियान हाथ में लिया है मंत्र दीक्षा का। जिससे बच्चों का जीवन सुसंस्कारी बनेगा।

कार्यक्रम का शुभारंभ तेयुप के सदस्यों ने विजय गीत से किया। तेरापंथ महासभा के उपाध्यक्ष संजय खटेड़ ने बच्चों को उद्बोधन दिया। दिल्ली ज्ञानशाला के संयोजक रतनलाल जैन ने अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम की समाप्ति पर विशाल जैन ने आभार प्रकट किया। कार्यक्रम का संचालन तेयुप के पूर्व मंत्री दिल्ली से सौरभ आंचलिया ने किया।

प्रवीण बैंगानी, पीतमपुरा, तेरापंथ सभा के अध्यक्ष ने समागत सभी सज्जनों का स्वागत एवं कृतज्ञता ज्ञापित की।

ग्रीन पार्क (दक्षिण दिल्ली)

साध्वी डॉ० कुंदनरेखा जी के सान्निध्य में तेले का सामूहिक-तप अभिनंदन एवं मंत्र दीक्षा का कार्यक्रम संयुक्त रूप से संपन्न हुआ। इस अवसर पर साध्वी कुंदनरेखा जी ने कहा कि 'तप' आत्मशुद्धि का महानतम उपक्रम है।

आधि-व्याधि एवं उपाधि का निवारण तप समाधिमय जीवन जीने की प्रेरणा देता है। आयुर्वेदिक आचार्यों ने इसे पुष्ट करते हुए कहा कि न खाने से शरीर स्वस्थ, मन प्रसन्न एवं भावधाराएँ पवित्र होती हैं। दक्षिण दिल्ली के भाई-बहनों ने सामूहिक तेले का अनुष्ठान कर कर्मों की शृंखला को तोड़ने का प्रयास किया है। लगभग २० भाई-बहन तेले के अनुष्ठान में सहभागी बने हैं। सबके आध्यात्मिक जीवन के प्रति

मंगलकामना।

मंत्र दीक्षा के उपलक्ष्य में साध्वीश्री जी ने कहा कि महामंत्र चौदह पूर्वों के सार युक्त का अद्भुत महामंत्र है। पूरी एकाग्रता एवं जागरूकता के साथ शुद्ध उच्चारण सहित जो जप में तल्लीन होता है, वह संसार के भ्रमण का अंत कर सकता है, उसके साथ-साथ आनंद एवं शांति को भी हस्तगत कर विघ्न-बाधाओं को दूर कर सकता है।

साध्वी सौभाग्ययशा जी ने कहा कि नमस्कार महामंत्र की शक्ति अपार है। ज्ञानशाला के तेरह बच्चों को तेयुप द्वारा मंत्र दीक्षा किट बाँटी गई। दक्षिण दिल्ली, सभा के अध्यक्ष हीरालाल गेलड़ा सहित समाज के वरिष्ठ गोविंद बाफना, अरविंद दुगड़ आदि ने बच्चों को विशेष प्रोत्साहित किया।

जैन विद्या परीक्षाओं के प्रमाण पत्र, तेरापंथ सभा, दिल्ली के तत्त्वावधान में होने वाले इस उपक्रम में सुशीला गोलछा और दुगड़ ने जैन परीक्षाओं की जानकारी देते हुए विद्यार्थियों को प्रमाण पत्र वितरित किए। कार्यक्रम का प्रारंभ विजय गीत से तेयुप, दिल्ली द्वारा किया गया। आभार ज्ञापन तेयुप, दिल्ली से करुण सेठिया ने किया। तेयुप के मंत्री अमित डूंगरवाल ने अपने विचारों की अभिव्यक्ति दी। साध्वी कल्याणयशा जी ने गीत का संगान किया।

साध्वी कुंदनरेखा जी ने बच्चों को संकल्प करवाकर मंत्र दीक्षा प्रदान की। त्रिआयामी कार्यक्रम वृहद रूप में मनाया गया। दक्षिण दिल्ली भाई-बहनों का उत्साह इस बात का साक्षी रही।

जलगाँव

अभातेयुप के तत्त्वावधान में संपूर्ण भारत देश व विदेश की ३५७ शाखाओं में एक साथ मंत्र दीक्षा कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जलगाँव में मुनि आलोक कुमार जी आदि के सान्निध्य में मंत्र दीक्षा कार्यक्रम का आयोजन अणुव्रत भवन में किया गया। सर्वप्रथम मुनि आलोक कुमार जी ने मंत्रों के उच्चारण द्वारा संस्कार निर्माण की जरूरत पर अपने विचार सदन के समक्ष प्रस्तुत किए। मुनिश्री ने बताया कि नवकार महामंत्र के रोज जप करने से हम अपने कर्मों की कर्म निर्जरा कर सकते हैं। भौतिकवाद की चकाचौंध में बच्चों में संस्कार निर्माण हेतु ज्ञानशाला शुरू की गई एवं मंत्र दीक्षा में मंत्रों द्वारा संस्कारों का एक सुरक्षा कवच बच्चों में निर्माण किया जाता है। बचपन में ही बच्चों में संस्कार निर्माण हो जाए तो भविष्य में वे भौतिक चकाचौंध से अपनी सुरक्षा कर सकते हैं।

मुनि हिम कुमार जी ने नवकार मंत्र के सुंदर गीत की प्रस्तुति प्रस्तुत की। अपने वक्तव्य में मुनिश्री ने एक बंदर की सुंदर

कहानी बताकर रोज नवकार मंत्र के जप करने की महानता के बारे में बताया।

मुनि लक्ष्य कुमार जी ने 'नवकार महामंत्र मासखमण' करने की सभी ज्ञानार्थी बच्चों को प्रेरणा प्रदान की। रोज सुबह, दोपहर, शाम को भोजन से पहले ११ नवकार मंत्र का जप करना है। ऐसे रोज के ३३ बार नवकार महामंत्र का जप ५ माह तक करना है तभी आपका नवकार महामंत्र मासखमण माना जाएगा।

जलगाँव ज्ञानशाला के ज्ञानार्थी बच्चों द्वारा सबके समक्ष विशेष प्रस्तुति प्रस्तुत की गई। मुनिश्री ने नवम आयु वर्ष के ४ ज्ञानार्थी बच्चों को मंत्र दीक्षा व अन्य ज्ञानार्थी बच्चों को मंगल पाथेय प्रदान किया।

तेयुप अध्यक्ष सुदर्शन बैद ने अपने वक्तव्य में गणाधिपति आचार्यश्री तुलसी का स्मरण करते हुए बताया कि ज्ञानशाला यह उपक्रम आचार्यश्री तुलसी के द्वारा शुरू किया हुआ उपक्रम है। ज्ञानशाला के ज्ञानार्थी श्रेयांश जयेश लोढ़ा के ७ का उपवास है, यह ज्ञानशाला के ही संस्कार हैं। मुनि आलोक कुमार जी, ज्ञानशाला के ज्ञानार्थी बच्चों के अभिभावकों व ज्ञानशाला की सर्व प्रशिक्षकों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की।

मंत्र दीक्षा के कार्यक्रम में जलगाँव, भुसावल व नशीराबाद के कुल ६० ज्ञानार्थी बच्चे उपस्थित थे।

आयोजन की सफलता हेतु ज्ञानशाला प्रशिक्षिका मैना छाजेड़, रोनाक चोरड़िया, सुषमा चोरड़िया, दक्षता सांखला, रीतु छाजेड़, ज्ञानशाला मुख्य प्रशिक्षिका विनीता समदरिया, तेरापंथ सभा से ज्ञानशाला प्रभारी नौरतमल चोरड़िया, तेयुप से उपाध्यक्ष-प्रथम रितेश छाजेड़ आदि अनेक गणमान्यजनों का सहयोग रहा।

सिवानी

तेरापंथ भवन में शासनश्री साध्वी कुंथुश्री जी के सान्निध्य में सभा के तत्त्वावधान में मंत्र दीक्षा का कार्यक्रम आयोजित किया गया। मंगलाचरण ज्ञानशाला के बच्चों ने अर्ह-अर्ह की वंदना फले गीत से किया।

साध्वी कुंथुश्री जी ने ज्ञानशाला के विद्यार्थियों को विधिवत मंत्र दीक्षा दिलाई, मंत्र का उच्चारण एवं मंत्र दीक्षा के संकल्प करवाए गए। साध्वीश्री जी ने कहा कि मंत्र में अनंत शक्ति होती है, इसकी ध्वनि तरंगें सारे शरीर को प्रभावित करती हैं। यह नमस्कार मंत्र नहीं महामंत्र है, यह चित्त को निर्मल बनाता है। आधुनिक युग में भटकाव के अनेक रास्ते हैं। बच्चों को सुस्थिर करने के लिए मंत्र दीक्षा दी जाती है, बचपन में दृढ़ आस्था के साथ मंत्र का स्मरण करने से सुसंस्कारों का बीज अंकुरित होता है। साध्वी सुलभयशा जी एवं साध्वी संबोधयशा जी ने बच्चों को सिखलाया, ज्ञानशाला के

बच्चों ने नमस्कार मंत्र पर प्रेरणास्पद नाटिका प्रस्तुत की।

प्रभारी ऋतु जैन ने विचार व्यक्त किए। सभाध्यक्ष रतनलाल जैन, अमित जैन, संदीप जैन ने ज्ञानशाला के बच्चों को पुरस्कृत किया। मंच का संचालन साध्वी सुमंगलाश्री जी ने किया।

नोहर

आचार्य तुलसी महाप्रज्ञ भवन, नोहर में ६ वर्ष से १२ वर्ष के बालक-बालिकाओं को संस्कारित करने के लिए मंत्र दीक्षा कार्यक्रम प्रेरणा स्रोत महिला मंडल प्रभारी सुशीला बाई बांठिया के सान्निध्य में आयोजित किया गया। सुशीला ने मंत्रों की जीवन में क्या शक्ति होती है इस विषय पर कहा कि बालकों को बचपन से ही धार्मिक संस्कार दिए जाएँ तो उनका भविष्य उज्वल हो सकता है। २० बच्चों की उपस्थिति द्वारा दीक्षा स्वीकार की गई। उन्हें प्रतिदिन २७ नवकार मंत्र की माला बड़ों का आदर व संतुलित आहार करने का संकल्प दिलाया गया।

कार्यक्रम की शुरुआत मंगलाचरण से हुई, ज्ञानशाला प्रभारी राधा सिपानी द्वारा बच्चों को उज्वल भविष्य की शुभकामनाएँ देते हुए मंत्र के बारे में भी जानकारी दी गई।

इस अवसर पर अमरनाथ जी डेरे से पधारे महंत धर्मनाथ जी महाराज द्वारा ज्ञानशाला के बच्चों को मंत्र दीक्षा किट भेंट की गई। तेयुप व महिला मंडल द्वारा गीतिका व भाषण प्रस्तुत किया गया। तेयुप अध्यक्ष गौतम बरड़िया, मंत्री जितु छाजेड़, कोषाध्यक्ष चंद्रेश सिपानी, महिला मंडल अध्यक्षा किरण देवी छाजेड़ सहित अनेक गणमान्यजनों की उपस्थिति रही। मंच का संचालन कन्या मंडल संयोजिका नीरू छाजेड़ ने किया।

राजनगर, भिक्षु बोधि स्थल

डॉ० साध्वी परमयशा जी के सान्निध्य में मंत्र दीक्षा के कार्यक्रम का आयोजन हुआ। डॉ० साध्वी परमयशा जी ने कहा कि बच्चों का मानस कोमल होता है। बच्चों को जैसा माहौल मिलता है, वैसा ही उनका मन-मस्तिष्क हो जाता है। बच्चों को केवल कार ही नहीं, अच्छे संस्कार दें। घर में ए०सी० न हो चलेगा, मगर परिवार के हर सदस्य के ब्रेन में ए०सी० जरूर होना चाहिए, क्योंकि बच्चा बिम्ब को नहीं प्रतिबिंब को पकड़ता है।

साध्वीश्री जी ने आगे कहा कि नमस्कार महामंत्र जैन परंपरा का एक प्रभावक मंत्र है। इस मंत्र के साथ अनंत साधकों की साधना है। जप करने वाले के पाप का बंध नहीं होता, अंतर शक्ति का जागरण होता है। आभामंडल पवित्र बनता

है। दिव्य शक्तियाँ अनुकूल बनती हैं। देवकृत उपद्रव प्रभावहीन हो जाते हैं। आपने सब ज्ञानशाला के विद्यार्थियों को संकल्प करवाए कि कम से कम २७ बार नमस्कार महामंत्र का जप करना चाहिए, नशामुक्त जीवन जीना चाहिए, माता-पिता व गुरुजनों के प्रति विनम्रता का भाव रखना चाहिए और गाली और अपशब्द का प्रयोग नहीं करना चाहिए।

कार्यक्रम की शुरुआत साध्वीश्री जी के नमस्कार महामंत्र से हुई और तत्पश्चात साध्वीश्री जी ने गीत का संगान किया।

साध्वी विनम्रयशा जी ने कहा कि जो बच्चा हर काम टाइम पर करता है वो बच्चा अच्छा होता है। बच्चों को अच्छे संस्कार दें, जिससे वे अच्छा नागरिक बने। मोबाइल और टी०वी० से बच्चों को दूर करें, जिससे वे हर क्षेत्र में सफल बने।

कार्यक्रम में ज्ञानशाला की प्रशिक्षिकाओं ने मंगलाचरण किया तथा ज्ञानशाला के बच्चों ने प्रस्तुति दी।

कार्यक्रम में हर्षलाल नवलखा (तेरापंथ सभा के कार्यवाही सदस्य), तेयुप के अध्यक्ष भूपेश धोका, ज्ञानशाला का पूर्व विद्यार्थी हंस चपलोट ने मंत्र दीक्षा पर अपने भावों की अभिव्यक्ति दी।

कार्यक्रम में साध्वीश्री जी ने सब ज्ञानशाला के बच्चों को मंत्र दीक्षा प्रदान

भीनासर

अभातेयुप के तत्त्वावधान एवं स्थानीय तेयुप, भीनासर द्वारा बालक व बालिकाओं के लिए मंत्र दीक्षा कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

बालावस्था संस्कारों के निर्माण का महत्त्वपूर्ण समय होता है। क्योंकि बचपन में प्राप्त संस्कारों के आधार पर ही भविष्य बनता है। मंत्र दीक्षा संस्कार निर्माण की पहली भूमिका है। यह विचार मुनि चैतन्य कुमार जी 'अमन' ने मंत्र दीक्षा के कार्यक्रम में उपस्थित श्रावक समाज को संबोधित करते हुए व्यक्त किए।

उन्होंने आगे कहा कि आज के इस इलेक्ट्रॉनिक मीडिया युग में बढ़ती हुई टेक्नोलॉजी के कारण बच्चों के संस्कार के धूमिल हो रहे हैं और मोबाइल की बढ़ती हुई प्रवृत्ति शिक्षा और संस्कारों में नुकसान पैदा कर रही है। जीवन निर्माण के अनेक माध्यमों में एक है—मंत्र दीक्षा। मंत्र की शक्ति से व्यक्ति के जीवन में रूपांतरण होता है, जिससे बाल पीढ़ी को भटकाव से बचाया जा सकता है।

इस अवसर पर ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने मंगलाचरण प्रस्तुत किया। बालक कुशल, अक्ष, गौरव ने गीत आदि प्रस्तुत किए। तेयुप अध्यक्ष मोहित सेठिया ने आभार ज्ञापित किया। ज्ञानशाला प्रशिक्षिका पिंकी कोचर ने संचालन किया। कार्यक्रम में मोहित सेठिया, विशाल सेठिया, सुमति पुगलिया, नवीन बैद, संदीप गुलगुलिया, युवराज बरमेचा विशेष रूप से उपस्थित थे।

तेरापंथ स्थापना दिवस के आयोजन

मालवीय नगर, जयपुर

शासन गौरव बहुश्रुत साध्वी कनकश्री जी के सान्निध्य में २६४वाँ तेरापंथ स्थापना दिवस का आयोजन अणुविभा केंद्र में तेरापंथी सभा, जयपुर द्वारा सुसंपन्न हुआ। बेला बैद ने श्री भिक्षु अष्टकम् का संगान किया।

शासन गौरव साध्वी कनकश्री जी ने संघ पुरुष को वंदना करते हुए कहा कि तेरापंथ स्थापना दिवस ज्योति के अवतरण का दिन है। आज के दिन हमें आचार्य भिक्षु के रूप में महान ज्योतिर्धर आचार्य मिले। गुरु पूर्णिमा का दिन गुरु के सम्मान का, गुरु भक्ति का और गुरु के प्रति श्रद्धा-समर्पण का दिन है।

साध्वीश्री जी ने परिषद के मध्य वर्षा योग स्थापना अनुष्ठान संपन्न किया। उपस्थित श्रावक-श्राविकाओं को सम्यक्त्व दीक्षा प्रदान की तथा श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन किया। साध्वीश्री जी द्वारा रचित भावपूर्ण गीत का साध्वी मधुलता जी आदि साध्वियों ने प्रस्तुति दी। राजकुमार बरडिया ने गीतिका प्रस्तुत की। मंच का संचालन साध्वी मधुलता

जी ने किया।

धम्म जागरणा : रात्रि में भिक्षु भक्ति संध्या का आयोजन हुआ। साध्वियों एवं गायक भाई-बहनों के भक्ति गीतों का समा बंध गया। बाल कलाकार निश्चय बरडिया व प्रतीक लोढ़ा के गीतों ने श्रोताओं का मन मोह लिया। अंत में साध्वीश्री जी ने प्रेरणा पाथेय प्रदान किया।

सुनाम

साध्वी कनकरेखा जी के सान्निध्य में सहवर्तिनी साध्वी गुणप्रेक्षाजी, साध्वी संवरविभा जी, साध्वी केवलप्रभा जी व साध्वी हेमंतप्रभा जी की उपस्थिति में २६५वाँ तेरापंथ स्थापना दिवस उत्साहवर्धक वातावरण में संपन्न हुआ। परमेश्वि स्तुति के साथ कार्यक्रम प्रारंभ हुआ।

गुरु पूर्णिमा के पावन दिन को व तेरापंथ स्थापना के महत्त्व को उजागर करते हुए साध्वी कनकरेखा जी ने कहा कि बहुमुखी प्रतिभा के धनी आचार्य भिक्षु ने आचार शिथिलता के विरुद्ध धर्मक्रांति की। उस धर्मक्रांति का नवनीत

निकला-तेरापंथ। पंथ की स्थापना करना उनका लक्ष्य नहीं था। उनका लक्ष्य था-सत्य को पाना, सत्य के लिए जीना। एक गुरु और एक विधान की छत तले तेरापंथ धर्मसंघ के विकास का अभ्युदय हुआ।

आपने आगे कहा कि आचार निष्ठा का नाम है-तेरापंथ, अनुशासन निष्ठा का नाम है-तेरापंथ, असांप्रदायिक धर्मसंघ का नाम है-तेरापंथ। गुरु निष्ठा, संघनिष्ठा का नाम है-तेरापंथ। हम सौभाग्यशाली हैं, हमें मर्यादा पुरुषोत्तम वीर भिक्षु जैसे गुरु मिले। तेरापंथ धर्मसंघ जैसा धर्मसंघ मिला, ऐसे गुरु को नमन करते हुए नंदनवन की शीतल छाया में साधना के पुष्प खिलते रहें।

त्रिदिवसीय अखंड जप-तप के साथ चातुर्मास का शुभारंभ हुआ। रात्रिकालीन कार्यक्रम में भिक्षु भक्ति संध्या का आयोजन बड़ा ही सरस रहा। साध्वी गुणप्रेक्षाश्री जी, साध्वी केवलप्रभा जी व साध्वी हेमंतप्रभा जी ने मधुर स्वर लहरियों के साथ पूरे वातावरण को संगीतमय बना दिया।

‘स्नेह मिलन - उड़ान मस्ती की’ का आयोजन

बैंगलुरु।

तेयुप, बैंगलुरु के तत्त्वावधान में स्नेह मिलन-उड़ान मस्ती की का आयोजन शहर में स्थित क्लब कबाना रिसोर्ट में हुआ। स्नेह मिलन में लगभग ४१२ जनों की उपस्थिति रही। तेयुप, बैंगलुरु की भजन मंडली प्रज्ञा संगीत सुधा ने कार्यक्रम का प्रारंभ मंगलाचरण से किया। अध्यक्ष प्रदीप चोपड़ा ने सभी का स्वागत किया।

गुरु दर्शनार्थ संघ के प्रभारी विकास बाबेल, दक्षिणांचल युवा सम्मेलन के प्रभारी विनोद कोठारी, आचार्यश्री तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर के प्रभारी सुरेश संचेती, उड़ान की मस्ती स्नेह मिलन के प्रभारी रमेश सालेचा ने परिषद की गतिविधियों की जानकारी दी। लक्की ड्रॉ विजेताओं को उपहार भेंट किए गए।

तत्पश्चात प्रायोजकों का एवं कार्यकर्ताओं का सम्मान किया गया। स्नेह मिलन प्रभारी रमेश सालेचा एवं संदीप चापेड़ा ने स्नेह मिलन में सम्मिलित सभी का आभार जताया। इस स्नेह मिलन में वर्तमान उपाध्यक्ष सुधीर पोखरना, उपाध्यक्ष विक्रम सेठिया, कोषाध्यक्ष पवन चोपड़ा, सहमंत्री विनोद कोठारी, संगठन मंत्री मोहित सुराणा एवं तेयुप साथी और परिवार उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन मंत्री विकास बाबेल एवं निवर्तमान अध्यक्ष विनय बैद ने किया।

निःशुल्क मधुमेह जाँच शिविर का आयोजन

विजयनगर।

तेयुप, विजयनगर द्वारा संचालित मानव सेवा को समर्पित आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर एवं डेंटल केयर अन्नपूर्णेस्वरी नगर में तेरापंथ स्थापना दिवस के अवसर पर निःशुल्क मधुमेह जाँच शिविर प्रायोजक परिवार शंकरलाल, प्रकाशचंद, टेबा परिवार के सहयोग से आयोजित किया गया। कुल १०३ लोग इस निःशुल्क शुगर कैंप से लाभान्वित हुए।

तेयुप अध्यक्ष ने कैंप के प्रायोजक परिवार को बधाई प्रेषित की। इस अवसर पर निवर्तमान अध्यक्ष श्रेयांस गोलछा, उपाध्यक्ष विकास बांठिया, संगठन मंत्री पवन बैद, परिषद सदस्य सुनील नागौरी, अनिल मांडोत, मनोज मांडोत, दीपक चावत, पारस नागौरी आदि अनेक गणमान्यजन उपस्थित थे। प्रायोजक परिवार का आभार मंत्री कमलेश चोपड़ा ने किया।

अस्थि चिकित्सा शिविर

पूर्वांचल-कोलकाता।

डॉ० धीरज मरोठी के निर्देशन में अस्थि चिकित्सा शिविर का आयोजन एटीडीसी पूर्वांचल-कोलकाता में किया गया। कुल ११ व्यक्तियों ने इस शिविर में चिकित्सा का लाभ लिया गया।

तेयुप पूर्वांचल-कोलकाता ने डॉ० धीरज मरोठी को उनके द्वारा प्रदत्त निरंतर सहयोग के लिए भी साधुवाद दिया। एटीडीसी के संयोजक रोहित धारेवा ने शिविर को सफल बनाने में योगदान दिया।

२९८वाँ आचार्यश्री भिक्षु जन्म दिवस व २६४वाँ तेरापंथ स्थापना दिवस

डोंबिवली।

२६८वाँ आचार्यश्री भिक्षु जन्म दिवस व २६४वाँ तेरापंथ स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में भिक्षु भक्ति तेरापंथ सभा भवन में रखी गई। शुरुआत नमस्कार महामंत्र से की गई।

दीपानंदन भक्ति ग्रुप से संयोजक हितेश हिरण, संजय राठौड़ ने गीतों का संगान किया। तेयुप के अध्यक्ष ललित मेहता, सहमंत्री दीपक बाफना, महावीर सिंघवी, चेतन सिंघवी, विनोद कोठारी, नरेंद्र गूदेचा, पवन चपलोट, मोहन चपलोट, प्रकाश गूंगदेचा सभी ने भक्ति संध्या में अपने भावों की अभिव्यक्ति भक्ति से की और भिक्षु जन्म दिवस मनाया।

अणुव्रत अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में प्रेस कॉन्फ्रेंस

सिरियारी।

सिरियारी संस्थान में अणुव्रत के प्रति उत्साह को देखते हुए तथा अणुव्रत के अध्यक्ष प्रकाश की पहल पर एक प्रेस कॉन्फ्रेंस का आयोजन किया गया। ज्ञातव्य है कि प्रकाश स्वयं एक पत्रकार हैं। उनके संपर्क से करीब १५ पत्रकार जो कि अलग-अलग अखबारों के संपादक थे। उन्होंने कार्यक्रम में भाग लिया।

मुनि आकाश कुमार जी ने सद्भावना, नैतिकता, नशामुक्ति के बारे में विस्तार से समझाया। मुनिश्री की प्रेरणा से अभिभूत हुए पत्रकारों व अन्य लोगों ने अणुव्रत को अपनाया व संकल्प पत्र भरकर मुनिश्री को समर्पित किए।

मुनि हितेंद्र कुमार जी ने अणुव्रत गीत का संगान किया। कार्यक्रम में उपस्थित अशोक डूंगरवाल ने उपस्थित सभी पत्रकारों को अणुव्रत के बारे में समझाया व उसे नियमित रखने का संकल्प भी करवाया व व्यवहार में अणुव्रत का उपयोग व प्रयोग कैसे करें यह भी समझाया।

कार्यक्रम में सिरियारी ठाकुर श्री मल्लिनाथसिंह जी, दिलीप बन्ना व श्याम बन्ना, सरपंच दीक्षिता कंवर, नवीन छाजेड़ आदि उपस्थित थे।

संवेदी संज्ञाओं से बचने का प्रयास...

(पृष्ठ १२ का शेष)

गृहस्थ परिग्रह संज्ञा से बचने के लिए अनैतिकता से बचने का प्रयास करें। जो अर्थाजर्जन नैतिकता से किया है, उसका दुरुपयोग न हो। अनासक्त रहे। उपासक श्रेणी तो संज्ञाओं के प्रति और अधिक जागृत रहे।

पूज्यप्रवर ने कालू यशोविलास का सुमधुर सुंदर विवेचन करते हुए पूज्य कालूगणी के अनुशासन के प्रसंगों को समझाया। २१ रंगी तपस्या से संबंधित तपस्वियों को प्रत्याख्यान करवाए। उपासक प्रशिक्षण शिविर के शिविरार्थियों को परम पावन ने उपसंपदाएँ ग्रहण करवाईं।

मुनि अनेकांत कुमार जी ने २१ रंगी तपस्या से जुड़ने की प्रेरणा दी। मुनि दिनेश कुमार जी ने संचालन किया।

♦ उपदेश सुनने की भावना भी अच्छी बात है। उपदेश की सौ बातें सुनी जाएँगी तो उसमें से दो-चार बातें जीवन में हृदयंगम भी हो सकती हैं, उतर भी सकती हैं।

— आचार्यश्री महाश्रमण



साधना व आत्मकल्याण के लिए नव तत्त्व को जानें : आचार्यश्री महाश्रमण

नंदनवन (मुंबई), १० जुलाई, २०२३

अध्यात्म साधना के सजग प्रहरी आचार्यश्री महाश्रमण जी ने भगवती सूत्र के सातवें शतक के दशम उद्देशक की व्याख्या करते हुए फरमाया कि भगवान महावीर राजगृह नगर में विराजमान थे। गुणशीलक नामक चैत्य पृथ्वी शिला पटक पर विराजमान थे। वहाँ अन्य संप्रदाय के लोग भगवान के परिपार्श्व में रहा करते थे और आपस में बैठकर बातें करते थे।

उन लोगों में भगवान के सिद्धांत के बारे में चर्चा चल रही थी कि ज्ञात पुत्र धर्मास्तिकाय आदि पाँच अस्तिकाय में चार अजीव बताते हैं। एक पुद्गल को मूर्त बताते हैं। इधर उन लोगों में चर्चा चल रही थी, उधर गौतम स्वामी का वहाँ गोचरी करने आना हुआ। उन लोगों ने सोचा कि इनसे इस बारे में पूछते हैं। वे बोले कि आपके धर्माचार्य पाँच अस्तिकाय बताते हैं। चार अजीव हैं, चार अमूर्त हैं, ये क्या बात है।

गौतम स्वामी बोले—हम तो सर्व



अस्तिको अस्तिकाय मानते हैं। सर्व नास्तिको नास्तिकाय बताते हैं। वहाँ से गौतम स्वामी ने भगवान महावीर के पास आकर उन्हें सारी घटना बताई। दूसरे दिन वे अन्य संप्रदाय वाले भगवान के

पास आ गए। भगवान ने प्रवचन में कालोदयी को संबोधित करते हुए वह बात शुरू कर दी।

कालोदयी ने पूछा कि क्या धर्मास्तिकाय-अधर्मास्तिकाय,

आकाशस्तिकाय में जीव ठहर सकता है क्या? भगवान ने कहा कि पुद्गलास्तिकाय पर ही जीव ठहर सकता है और जीवास्तिकाय में ही कर्म ठहर सकता है। कालोदयी भगवान से सिद्धांत की बात

उसने सुनी और धर्म की बात भगवान से सुनकर प्रभु के पास दीक्षित हो गया।

कुछ समय पश्चात भगवान वहाँ से विहार कर देते हैं। पंचास्तिकाय की बात भगवती में आई है। छः द्रव्यों में पंचास्तिकाय के सिवाय काल भी है। नौ तत्त्व और पंचास्तिकाय अलग-अलग क्यों बताया गया है। यह अनेक दृष्टिकोण से हो सकता है। वहाँ पर पंचास्तिकाय या छः द्रव्य हैं, वह लोक है। जो हमें दिखाई दे रहा है वह पुद्गलास्तिकाय का प्रपंच है। साधना व आत्म कल्याण की बात बताई है, तो नव तत्त्व को जानो। यह जैन दर्शन का एक उल्लेख यहाँ बताया गया है।

पूज्यप्रवर ने कालू यशोविलास का विवेचन करते हुए पूज्य कालूगणी के मारवाड़-मरुधर यात्रा के प्रसंग को समझाया। पूज्यप्रवर ने २१ रंगी में साधनारत तपस्वियों को प्रत्याख्यान करवाए।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

सब जीव एक समान : आचार्यश्री महाश्रमण



नंदनवन (मुंबई), ६ जुलाई, २०२३

संबोध प्रदाता आचार्यश्री महाश्रमण जी ने अपने चातुर्मासिक प्रवचन में भगवती सूत्र के ७वें शतक के आठवें उद्देशक की व्याख्या करते हुए फरमाया कि जैन दर्शन में आत्मवाद का सिद्धांत है। आत्मा के बारे में कहा जाता है कि आत्माएँ अनंत हैं। दुनिया में जीव भरे पड़े हैं। लोकाकाश में जीव हैं। प्रत्येक जीव के असंख्य प्रदेश होते हैं। संपूर्ण लोक में एक ही आत्मा के प्रदेश फैल सकते हैं। लोकाकाश के जितने देश हैं, उतने ही प्रदेश प्रत्येक आत्मा के होते हैं।

चार चीजें समान हैं—धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, लोकाकाश और एक जीव। हाथी और कुंथु दोनों के जीव एक समान

हैं। एक दीपक के प्रकाश के उदाहरण से समझाया कि प्रकाश को जितना अवकाश मिलेगा उतना फैल जाएगा। सारी आत्माओं के समान प्रदेश हैं, जैसा शरीर मिलता है, वैसे फैल जाते हैं। एडजस्टमेंट की शिक्षा हम अपनी ही आत्मा से ले सकते हैं। जैसी स्थिति है, उसमें समता रखो।

आत्म प्रदेशों से सब जीवों में समानता है। केवल समुद्घात के समय आत्मा पूरे लोक में फैल जाती है। आत्मा में फैलने और संकुचित होने की समान शक्ति होती है। पूज्यप्रवर ने कालू यशोविलास का सुंदर विवेचन भी करवाया।

बड़ी दीक्षा का आयोजन

२६ जून को हुई मुनि दीक्षा में दीक्षित

नव साधु-साध्वियों को पूज्यप्रवर ने पाँच महाव्रत और एक रात्रि भोजन विरमण व्रत-छेदोपस्थापनीय चारित्र को समझाकर स्वीकार करवाया। छेदोपस्थापनीय चारित्र में स्थापित करवाया। नई समणियों को भी पूज्यप्रवर ने, मृषावाद, अदत्तादान, मैथुन का आजीवन त्याग करवाया। अहिंसा में भी जागरूक रहने की प्रेरणा दिलाई। परिग्रह से भी बचने का प्रयास करने की प्रेरणा दी।

साध्वीवर्या सम्बुद्धयशा जी ने कहा कि अगर आत्मा पाप से क्लुषित है, तो वह व्यक्ति जीवन में अच्छाइयाँ नहीं प्राप्त कर सकता। अच्छे मार्ग पर नहीं चल सकता। शुद्धि के लिए पाप का शोधन करना होगा। पाप को जानना होगा। जिसे सम्यक् दर्शन की आँख प्राप्त हो जाती है, उसे करणीय-अकरणीय का ज्ञान हो सकता है।

नव दीक्षित मुनि विपुल कुमार जी, साध्वी समत्वप्रभा जी, साध्वी वैराग्यप्रभा जी ने पूज्यप्रवर के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। अपने सात दिनों के अनुभव बताए। समणीवृंद ने भी प्रस्तुति दी।

पूज्यप्रवर ने २१ रंगी तप से संबंधित तपस्वियों एवं अन्य तपस्वियों को तपस्या के प्रत्याख्यान करवाए।

संवेदी संज्ञाओं से बचने का प्रयास करें : आचार्यश्री महाश्रमण

नंदनवन (मुंबई), ८ जुलाई, २०२३

आगम ज्ञान प्रदाता आचार्यश्री महाश्रमण जी ने भगवती सूत्र के सातवें शतक के आठवें उद्देशक की व्याख्या करते हुए फरमाया कि प्रश्न किया गया है कि भंते! कितनी संज्ञाएँ हैं। उत्तर दिया गया—गौतम! दस संज्ञाएँ हैं—आहार-भय-क्रोध आदि। जैन तत्त्व ज्ञान के मनोविज्ञान से जुड़ा संज्ञा शब्द है। इस शब्द का प्रयोग भीतर की वृत्तियों के संदर्भ में किया गया है।

हमारे भीतर अनेक वृत्तियाँ होती हैं। हमारे कषाय संज्ञाएँ हैं। ये दो प्रकार के हो सकते हैं—सुसुप्त अवस्था और जागृत अवस्था। निमित्त मिलने पर सुसुप्तवृत्ति जागृत हो जाती है, उत्तेजित हो जाती है। साधना की उत्कृष्ट अवस्था में तो संज्ञाएँ समाप्त हो जाती हैं। ये संज्ञाएँ कर्मों से संबंधित होती हैं।

आहार संज्ञा खाने की वृत्ति है। जीभ के स्वाद से नहीं खाना है। स्वास्थ्य और साधना के लिए खाना है। भोजन के लिए तन नहीं है। भय संज्ञा यानी डर की प्रवृत्ति। डर से आदमी झूठ बोल सकता है। दृष्टि उघांत सी हो जाती है। तीसरी

है—परिग्रह संज्ञा। आसक्ति की भावना से संग्रह की चेतना। क्रोध संज्ञा मोहनीय कर्म से उदय होती है। क्रोध में व्यक्ति लाल-पीला हो जाता है।

मान संज्ञा यानी अहंकार की भावना। माया संज्ञा से आदमी छिपाने का कार्य करता है। लोभ संज्ञा से भी संग्रह की भावना रहती है। ये आठ संज्ञाएँ संवेद के रूप में हैं, इन्हें कमजोर करने का प्रयास करना चाहिए।

लोक संज्ञा और ओघ संज्ञा ज्ञान से जुड़ी संज्ञाएँ हैं। ये ज्ञानावरणीय कर्म के क्षयोपशम से होती है। ये ज्ञानात्मक संज्ञाएँ हैं। पंचेन्द्रिय प्राणियों में तो स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। पर विकलेन्द्रिय व स्थावर काय में भी वर्तमान के वैज्ञानिक संशोधन से देखी गई है।

संज्ञाएँ बहुत गहरी होती है, पर बाहर में आ जाती है। योग रूप में संज्ञाओं से बचने का प्रयास करें। हम साधना और अभ्यास के द्वारा इनको प्रतनू बनाने का प्रयास करें। गृहस्थ जीवन में भी श्रावक बहुत ऊँचा हो सकता है।

(शेष पृष्ठ ११ पर)